1:-
गणेश आया रिद्धि सिद्धि ल्याया,
भरया भण्डारा रहसी ओ राम,- मिल्या सन्त उपदेशी,
गुरु मोंयले री बाताँ कहसी ,ओ राम म्हान झीणी झीणी बाता कहसी ॥टेर॥
हल्दी का रंग पीला होसी, केशर कद बण ज्यासी ॥1॥
कोई खरीद काँसी, पीतल, सन्त शब्द लिख लेसी ॥2॥
खार समद बीच अमृत भेरी, सन्त घड़ो भर लेसी ॥3॥
खीर खाण्ड का अमृत भोजन, सन्त नीवाला लेसी ॥4॥
कागा कँ गल पैप माला, हँसलो कद बण ज्यासी ॥5॥
ऊँचे टीले धजा फरुके, चौड़े तकिया रहसी ॥6॥
साध-सन्त रल भेला बैठ, नुगरा न्यारा रहसी ॥7॥
शरण मछेन्दर जती गोरख बोल्या, टेक भेष की रहसी ॥8॥

2:-
सेवा म्हारी मानो गणपत, पूजा म्हारी मानो ।
खोलो म्हारे हिवडे रा ताला जी ॥ टेर ॥
जल भी चढ़ाऊँ देवा, कोनी रे अछूता । कोई जलवा ने मछल्या बिगाड़्या जी ॥ 1 ॥
चन्दन चढ़ाऊँ देवा, कोनी रे अछूता । चन्दन ने सर्प बिगाड़्या जी ॥ 2 ॥
फूल चढ़ाऊँ देवा, कोनी रे अछूता । फूलड़ा ने भँवरा बिगाड़्या जी ॥ 3 ॥
दूधड़ला चढ़ाऊँ देवा, कोनी रे अछूता । दूधड़ला ने बाछड़ा बिगाड़्या जी ॥ 4 ॥
काया भी चढ़ाऊँ देवा, कोनी रे अछूता । काया न करमा बिगाड़्या जी ॥ 5 ॥
पाँच चरण जति गोरक्ष बोल्या । साँई तेरा नाम अछूता जी ॥ 6 ॥

3:-
श्री गणेश काटो कलेश, नित्य हमेश, ध्यावाँ थाने अरजी कराँ दरबार में ॥ टेर ॥
अरजी दरबार में, करता सरकार में, श्री गणेश, काटो कलेश ॥ 1 ॥
दूँद दुँदाला, सूँड सुन्डाला-मोटा मूँड, लम्बी सूंड । फरकै दूंद, ध्यावाँ थानै अरजी करां दरबार में ॥ 2 ॥
पुष्पन माला, नयन विशाला-चढै सिन्दूर, बरसे नूर । दुश्मन दूर, ध्यावाँ थाने अरजी करां दरबार में ॥ 3 ॥
रिद्ध सिद्ध नारी, लागै पियारी, रिद्ध सिद्ध नार, भरो भण्डार।करो कल्याण ध्यावाँ थाने अरजी करां दरबार में
दास मोती सिंह, तेरा यश गावै, गुरु चरणा में शीश नवावै ।दो वरदान, मागूं दान, सेवा अपार, ध्यावां थाने अरजी ॥ 5 ॥

4:-

धमक पधारो गणपति- ओ निज मन्दिरिये में धमक पधारो जी ॥ टेर ॥

ब्रह्मा भी आये म्हारे, विष्णु भी आये जी । सँगड़े में ल्याया सरस्वती ॥ 1 ॥

शिवजी भी आये संग नाँदे न ल्याये जी । संगड़े में ल्याये पारवती ॥ 2 ॥

राम भी आये म्हारे लिछमन भी आए जी । संगड़े में ल्याये सिया सती ॥ 3 ॥

कौरव भी आए म्हारे पाण्डव भी आए जी । संगड़े में ल्याये द्रोपदी ॥ 4 ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो जी । रिद्धि-सिद्धि ल्याये गणपति ॥ 5 ॥

5:-

आव सखी देख गणपत घूम है ॥टेर॥

लम्बी सूँड मतवाला जी घृत, सिन्दुर थार मस्तक सोहे देवा,

शिव-शक्ति का बाला हो गणपत, देख भया मतवाला जी ॥1॥

राजा भी सुमर थान, परजा भी सुमर है सुमर है जोगी जटावाला जी ।

उठ सँवरी दोपहरी तान सुमर देवा, रिद्धि सिद्धि देवणवाला ओ गणपत ॥2॥

ओढ़ पीत पीतम्बर सोहे देवा, गल फूलंडा री फूल मालाजी । सात सखी रल मंगल गाव देवा,

बुद्धि को देवण हाला जो गणपत ॥3॥

नात गुलाब मिल्या, गुरु पूरा , हृदय में करियो उजाला जी ।

भानीनाथ शरण सतगुरु की देवा,खोल्या भ्रम का ताला ओ गणपत ॥4॥

6:-

तेरा भगत करे अरदास, ज्ञान मोहे दीज्यो हे काली ॥टेर॥

माली कै नै बाग लगायो, पर्वत हरियाली, तेरे हाथ ने पुष्पन की माला, द्वार खड़्या माली ॥1॥

जरी का दुपट्टा चीर शीश पर सोहे जंगाली, तेरै नाकन में नकबेसर सोहे कर्ण फूल बाली ॥2॥

सवा पहर के बीच भवन में खप्पर भर खाली, कर दुष्टन का नास भगत की करना रखवाली ॥3॥

चाबत नगर पान होठ पर छाय रही लाली, तनै गावे मोतीलाल कालका कलकत्ते वाली ॥4॥

7:-

मंगल की मूल भवनी शरणा तेरा है, शरणा तेरा है, आसरा तेरा है, शरणा तेरा है ॥टेर॥

मैया है ब्रह्मा की पुतरी, लेकर ज्ञान सवर्ग से उतरी,

आज तेरी कथा बनाय देई सुथरी, प्रथम मनाया है ॥1॥

मैया भवन बणा जाली का, हार गूंथ ल्याया है माली का,

हो ध्यान घर कलकत्ते वाली का, पुष्प चढ़ाया है ॥2॥

मैया महिषासुर को मर्या, अपने बल से धरण पछाड़्या,

हो हाथ लिये खाण्डा दुधारा, असुर संघार्या है ॥3॥

कहता शंकर जटोली वाला, हरदम रटे गुरां की माला,

हो खोल मेरे हृदय का ताला, विद्या बर पाया है ॥4॥

8:-

घट राखो अटल सुरती ने, दरसन कर निज भगवान का ॥टेर॥

सतगुरु धोरे गया संतसंग में, गुरांजी भे दिया हरि रंग में ।

शबद बाण मर्या मेरे तन में, सैल लग्या ज्यूँ स्यार का ॥मेरा मन चेत्या भक्ति में ॥1॥

जबसे शबद सुण्या सतगरु का, खुल गया खिड़क मेरे काया मंदिर का ।

मात पिता दरस्या नहीं घरका, दूत लेजा जमराज का ।तेरा कोई न संगी जगती में ॥2॥

नैन नासिका ध्यान संजोले, रमता राम निजर भरजोले । बिन बतलाया तेरे घट में बोले,

बेरो ले भीतर बाहर का ॥अब क्यूँ भटके भूली में ॥3॥

अमृतनाथजी रम गया सुन्न में, मुझको दीदार दिखा दिया छत में ।

मद्यो मगन हो जा भजन में, रुप देख निराकार का ।अब क्या सांसा मुक्ति में ॥4॥

9:-

भजन मत भूलो एक घड़ी, शबद मत भूलो एक घड़ी ।काया पूतलो पल में जासी, सिर पर मौत खड़ी ॥टेर॥

इण काया में लाल अमोलक, आगे करम कड़ी ।भँवर जाल में सब जीव सून्या, बिरला ने जाण पड़ी ॥1॥

इण काया में दस दरवाजा, ऊपर खिड़क जड़ी ।गुरु गम कूँची से खोलो किवाड़ी, अधर धार जड़ी ॥2॥

सत की राड़ लड़ै सतसूरा, चढ्या बंक घाटी ।गगन मण्डल में भर्या भंडारा, तन का पाप कटी ॥3॥

अखै नाम नै तोलण लाग्या, तोल्या घड़ी घड़ी ।अमृतनाथजी अमर घर पुग्या, सत की राड़ लड़ी ॥4॥

10:-

भजन बिना कोई न जागै रे, लगन बिना कोई न जागै रै।

तेरा जनम जनम का पाप करेड़ा, रंग किस बिध लागे रै॥टेर॥

संता की संगत करी कोनी भँवरा, भरम कैयाँ भागै रै।राम नाम की सार कोनी जाणै, बाताँ मे आगै रै ॥1॥

या संसार काल वाली गीन्डी,टोरा लागे रै।गुरु गम चोट सही कोनी जावै, पगाँ ने लागे रै॥2॥

सत सुमिरण का सैल बणाले, संता सागे रै।नार सुषमणा राड़ लडै जद, जमड़ा भागै रै॥3॥

नाथ गुलाब सत संगत करले, संता सागे रै।भानीनाथ अरज कर गावै, सतगुराँजी के आगै रै ॥4॥

11:-

कायर सके ना झेल, फकीरी अलबेला को खेल॥टेर॥

ज्यूँ रण माँय लडे नर सूरा, अणियाँ झुक रहना सेल।गोली नाल जुजरबा चालै, सन्मुख लेवै झेल॥1॥

सती पति संग नीसरी, अपने पिया के गैल।सुरत लगी अपने साहिब से, अग्नि काया बिच मेल॥2॥

अलल पक्षी ज्यूँ उलटा चाले, बांस भरत नट खेल। मेरु इक्कीस छेद गढ़ बंका, चढ़गी अगम के महल॥3॥

दो और एक रवे नहीं दूजा, आप आप को खेल। कहे सामर्थ कोई असल पिछाणै, लेवै गरीबी झेल॥4॥

12:-

बलिहारी बलिहारी म्हारे सतगुरुवां ने बलिहारी।
बन्धन काट किया जीव मुक्ता, और सब विपत बिड़ारी॥टेर॥
वाणी सुनत परस सुख उपज्या, दुर्मति गयी हमारी।
करम-भरम का संशय मेट्या, दिया कपाट उधारी॥1॥
माया, ब्रह्म भेद समझाया, सोंह लिया विचारी।
पूरण ब्रह्म कहे उर अंदर, काहे से देत विड़ारी॥2॥
मौं पर दया करो मेरा सतगुरु, अबके लिया उबारी।
भव सागर से डूबत तार्या, ऐसा पर उपकारी॥3॥
गुरु दादू के चरण कमल पर, रखू शीश उतारी।
और क्या ले आगे रखू, सादर भेट तिहारी॥4॥

13:-

कोई पीवो राम रस प्यासा, कोई पीवो राम रस प्यासा।
गगन मण्डल में अली झरत है, उनमुन के घर बासा॥टेर॥
शीश उतार धरै गुरु आगे, करै न तन की आशा।
एसा मँहगा अमी बीकर है, छः ऋतु बारह मासा॥1॥
मोल करे सो छीके दूर से, तोलत छूटे बासा।
जो पीवे सो जुग जुग जीवे, कब हूँ न होय बिनासा॥2॥
एंही रस काज भये नृप योगी, छोडया भोग बिलासा।
सहज सिंहासन बैठे रहता, भस्ती रमाते उदासा॥3॥
गोरखनाथ, भरथरी पिया, सो ही कबीर अम्यासा।
गुरु दादू परताप कछुयक पाया सुन्दर दासा॥4॥

14:-

पिंजरै वाली मैना, भजो ना सिया राम राम।
भजो ना सिया राम राम, रटोना राधे श्याम श्याम॥टेर॥
पाँच तत्व का बण्या पिंजरा, जिसमें रहती मैना।
जाया नाम जनम का रहसी, किस विध होसी रहना॥1॥
रंग रंगीला बण्या पिंजरा, जिसमें रहती मैना।
खुल जाया पिंजरा, उड़ जाय मैना, किस विध होसी रहना॥2॥
भजन करो ये प्यारी मैना, नहीं काग बण ज्याना।
जहर पियाला कव्वौ पिवै, अमृत पिवै मैना॥3॥
दास कबीर बजावै वाला, गाय सुनावै मैना।
भगवत की गत भगवत जाणै, नहीं किसीने जाणा॥4॥

15:-

भोली साधुड़ाँ से किसोडी भिराँत म्हार बीरा रै साध रै पियालो रल भेला पीवजी॥टेर॥

सतगुरु साहिब बंदा एक है जीधोबीड़ा सा धोवै गुरु का कपड़ा रै, कोई तन मन साबुन ल्याय।

तन रै सिला मन साबणा रै, कोई मैला मैला धुप धुप ज्याय॥1॥

काया रे नगरियै में आमली रै, जाँ पर कोयलड़ी तो करै रे किलोल।

कोयलड्याँ रा शबद सुहावना रै, बै तो उड़ उड़ लागै गुराँ के पांव॥2॥

काया रे नगरिये में हाटड़ी रै,जाँ पर विणज करै है साहुकार।

कई रे करोड़ी धज हो चल्या रै, कई गय है जमारो हार॥3॥

सीप रे समन्दरिये मे निपजै रै, कोई मोतीड़ा तो निपजै सीपां माँय।

बून्द रे पड़ै रे हर के नाम की रै, कोई लखिया बिरला सा साध॥4॥

सतगुरु शबद उच्चारिया रै, कोई रटिया सांस म सांस।

देव रे डूंगरपुरी बोलिया रै, ज्यारो सत अमरापुर बास॥5॥

16:-

गुरु ज्ञान ध्यान को झबरक दिवलो, हालो सत् के मारगाँ॥टेर॥

आप सुवारथ सब जग राचै, परमारथ कुण राचै ओ बाबाजी,परमारथ रा राचणियाँ नर थोड़ा रे बीरा॥1॥

हाथाँ में थारे झबरक दिवलो, आंगनियो कोनी सूझे ओ बाबाजी,

पैड़ी ये दुहेली किस विध चढस्यो रे बीरा॥2॥

समदरिये रा माणसिया थे तालरियाँ कांई रीझ्या ओ बाबाजी,

समदरिये में महंगा मोती निपजै रे बीरा॥3॥

ओछे जल का मानसिया थारी तुष्णा कबुहूँ न भागै ओ बाबाजी,

पर नार्यो रा मोहेड़ा नर हीणा रे बीरा॥4॥

तँवराँ मे टीकायत सिद्ध श्री रामदेवजी बोल्या ओ बाबाजी,

हाथ लगेड़ो माणसियो मत खोवो रे बीरा॥5॥

17:-

बस बात जरासी, होसी लिखी रे तकदीर॥टेर॥

लिखी करम की कैयां टलसी, तेरो जोर कठे ताई चलसी,

दुरमत करयां रे घणो जी बलसी, दुरमत छोड़ो मेरा बीर॥1॥

तूँ क्यूँ धन की खातिर भागे, किस्मत तेरे सागे सागे,

तूँ सोवे तो भी या जागे थ्यावस ले ले मेरा बीर॥2॥

तेरो मन चोखी खाने पर, छाप लगी दाने दाने पर,

मिल जासी मौको आने पर,जिस रे दाने मे तेरो सीर॥3॥

के चावे तू चोखा संगपन, के चावे तूँ मान बड़प्पन,

होवे एक विचारे छप्पन, शंभु भजो रे रघुवीर॥4॥

18:-

बोलै नारी सुणो पियाजी, मानो म्हारी बात द्वारका थे जाओ। थे जावो पिव,
थे जावो, थे जावो, पिव थे जावो॥टेर॥
माल उधारो मिलै नहीं पिव, मुश्किल दाणै दाणै की। दोय वक्त मँ एक वक्त थारै बिद लागै है खाणै की॥
मीठी निकलै भूख पिया, थारा दुर्बल हो गया गात-द्वारका थे जाओ॥1॥
आन गरीबी आ घेरी, बरतण ना फूटी कौड़ी। तन का वस्त्र फाट गया पिव, फाटेड़ी चादर ओडी॥
सियां मरता फिरो, रात, दिन दे काखां मँ हाथ-द्वारका थे जाओ॥2।
जाकर भेंट करो प्रभु सँ पिव, मन मँ काँई आँट करो। अपने दिल की बात प्रभु सँ कहता काँई आँट करो।
सारी बातां सामर्थ म्हारा देवर है बृजनाथ-द्वारका थे जाओ॥3॥
मोहन कहे मत भूलो प्रभु नै याद करो च्यार घड़ी। लख चौरासी फिर आई, या चौपड़ गन्दैस्यार पडी॥
मोहन कहे या रीत प्रभु की दे दुर्बल नै साथ-द्वारका थे जाओ॥4॥

19:-

बुंगला देखी थारी अजब बहार, जां में निराकार दीदार ॥टेक॥
काया बुंगला मँ पातर नाचै, देख रहयो संसार ।किताक पगड़ी ले चल्या, कई गया जमारो हार ॥1॥
काया बुंगला में बीणजी बिणजै, बिणजै जिनसे अपार ।हरिजन हो सो हीरा बिणजै, पात्थर या संसार ॥2॥
काया बंगला में दौड़ा दौड़ै, दौड़ रहया दिनरात ।पांच पच्चीस मिल्या पाखरिया, लूट लिया बाजार ॥3॥
काया बुंगला में तपसी तापै, अधर सिंहासन ढाल ।हाड़ मांस से न्यारो खेलै, खेलै खेल अपार ॥4॥
काया बुंगला में चोपड़ मांडी, खेलै खेलण हार ।अबकै बाजी मंडी चौवठै, जीत चलो चाहे हार ॥5॥
नाथ गुलाम मिल्या गुरु पूरा, जद पाया दीदार ।भानी नाथ शरण सतगुरु कै, हर भज उतरो पार ॥6॥

20:-

निपजै निपजै रे बीरा-म्हारे रे साधा के।ऐ उनाल्यों, स्यालो निपजै रे॥टेर॥
मनवो हाली चल्यो खेत मे, काँधे ज्ञान कुवाड़ी।
भरे खेत में दो दो काटे, पाप कुबद की डाली॥1॥
मनवो हाली, मनसा हालन, छाक सुवारी ल्याव।
पहली तो या साध जीमाव, पाछै काम करावै॥2॥
चन्दन चौकी चढ़यो डूचँव, खेत चिडकलि खावे।
ज्ञान का गोफिल लिया है हाथ में, कुबद चिडकलि उड़ावे॥3॥
पचलँग पाल मेढ कर मनकी, पाँच बलदियां जोती।
ओम् सोह का पलटा देकर, कुरक कुरक बरसाव॥4॥
धोला सा दोय बैल हमारा, रास पुरानी सेती।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, या साधा की खेती॥5॥

21:-

नगरी के लोगो, हाँ भलाँ बस्ती के लोगो।मेरी तो है जात जुलाहा, जीव का जतन करावा॥
हाँ के दुविधा परे सरकज्याँ ये, दुनिया भरम धरैगी।
कोई मेरा क्या करैगा रे, साई तेरा नाम रटूँगा॥टेर॥
आणा नाचै, ताणा नाचै, नाचै सूत पुराणा।
बाहर खड़ी तेरी नाचै जुलाही, अन्दर कोई न आणा॥1॥
हस्ती चढ़ कर ताणा तणिया, ऊँट चढ़या निर्वाणा।
घुढ़लै चढ़कर बणवा लाग्या, वीर छावणी छावां॥2॥
उड़द मंग मत खा ये जुलाही, तेरा लड़का होगा काला।
एक दमड़ी का चावल मंगाले, सदा संत मतवाला॥3॥
माता अपनी पुत्री नै खा गई, बेटे ने खा गयो बाप।
कहत कबीर सुणो भाई साधो, रतियन लाग्यो पाप॥4॥

22:-

सतगुरु पुरा म्हाने मिल्या है सुमरतां, पियाजी री छतरी बताओ जी॥टेर॥
कहाँ सेती तुम चलकर आया रे, कुण थाने रस्ता बताया जी,
कहाँ तेरा स्थान कहीजै रे, सो मोहे दरसाओ जी॥1॥
नाम नगर से चलकर आया रे, सतगुरु रस्ता बताया,
भवसागरिये मे तीरना उपर, पकड़ भुजा सतगुरु ल्याया॥2॥
चढ़ छतरी पर मगन भया है रे, भँवर कुसाली पे आया,
सात सखी रल मंगल गावै, जमड़ा देखत रोया॥3॥
नवलनाथ जोगी पुरा म्हाने मिलिया, रब का रस्ता बताया,
भणत कमाल नवल थारे शरणे, बैठ तन्दूरे पे गाया॥4॥

23:-

घट में बसे रे भगवान, मंदिर में काँई ढूंढ़ती फिरे म्हारी सुरता ॥टेर॥
मुरती कोर मंदिर में मेली, बा सुख से नहीं बोलै।
दरवाजे दरबान खड्या है, बिना हुकम नहीं खोलै ॥1॥
गगन मण्डल से गंगा उतरी, पाँचू कपड़ा धोले ।
बिण साबण तेरा मैल कटेगा, हरभज निर्मल होले ॥2॥
सौदागर से सौदा करले, जचता मोल करालै ।
जे तेरे मन में फर्क आवेतो, घाल तराजू में तोले ॥3॥
नाथ गुलाब मिल्या गुरु पूरा, दिल का परदा खोले ।
भानीनाथ शरण सतगुरु की, राई कै पर्वत ओलै ॥4॥

24:-

समझ मन माँयलारै, बीरा मेरा मैली चादर धोय।
बिन धोयाँ दुख ना मिटै रै, बीरा मेरा तिरणा किस बिध होय॥टेर॥
देवी सुमराँ शारदा रै, बीरा मेरा हिरदै उजाला होय।
गुरुवाँ री गम गैला मिल्या रे, बीरा मेरा आदु अस्तल जोय॥1॥
दाता चिणाई बावड़ी रै, ज्यामें नीर गगजल होय।
कई कई हरिजन न्हा चल्या रै, कई गया है जमारो खोय॥2॥
रोईड़ी रंग फूटरो रै, जाराँ फूल अजब रंग होय।
ऊबो मिखमी भोम मे रै, जांकी कलियन विणजै कोई॥3॥
चंदन रो रंग सांवलो रै, जाँका मरम न जाने कोय।
काट्या कंचन निपजै रै, ज्यामे महक सुगन्धी होय॥4॥
तन का बनाले कापडा रै, सुरता की साबुन होय।
सुरत शीला पर देया फटकाया रै, सतगुरु देसी धोय॥5॥
लिखमा भिखमी भौम में रै, ज्याँरो गाँव गया गम होय।
तीजी चौकी लांधजा रै, चौथी में निर्भय होय॥6॥

25:-

शुन्न घर शहर, शहर घर बस्ती, कुण सैवे कुण जागै है ।
साध हमारे हम साधन कै, तन सोवै ब्रह्म जागै है ॥टेर॥
भंवर गुफा मे तपसी तापै, तपसी तपस्या करता है।
अस्त्र, वस्त्र कछु नही रखता नाग निर्भय रहता है ॥1॥
एक अप्सरा आगै ऊबी, दूजी सुरमो सारै है ।
तीजी सुषमण सेज बिछावै, परण्या नहीं कँवारा है ॥2॥
एक पिलंग पर दोय नर सुत्या, कुण सौवे कुण जागै है ।
च्यारुँ पाया दिवला जोया, चोर किस विध लागै है ॥3॥
जल बिच कमल, कमल बिच कलिया, भंवर वासना लेता है ।
पांचू चेला फिरै अकेला, ए अलख अलख जोगी करता है ॥4॥
जीवत जोगी माया भोगी, मूवा पत्थर नर माणी रै ।
खोज्या खबर करो घट भीतर, जोगाराम की बाणी रै ॥5॥
परण्या पहली पुत्र जलमिया, मातपिता मन भाया है ।
शरण मच्छेन्दर जति गोरक्ष बोल्या, एक अखण्डी नै ध्याया है ॥6॥

26:-

म्हारे मालिक के दरबार, आवणा जतीक और नर सती नुगरा मिलज्यो रे मती ॥टेर॥
ज्ञान सरोदै सुरत पपैया, माखन खाणा मती ।
जै खाणा तो शायर खाणा, जाँ में निपजै रति रै ॥1॥
पहली तो या गुप्त होवती, अब हो लागी प्रगटी ।
राजा हरिशचंद्र तो सिद्ध कर निकल्या, लारे तारा सती रै ॥2॥
कै योजन में संत बसत है, कै योजन में जती ।
नौ योजन में संत बसत है, दस योजन में जती रै ॥3॥
दत्तात्रेय ने गोरख मिल गया, मिल गया दोनों जती ।
राजा दशरथ का छोटा बालक, गाबै लक्षमण जती रै ॥4॥

27:-

साधु लडे रे शबद के ओटै, तन पर चोट कोनी आयी मेरा भाई रे,
साधा करी है लड़ाई....ओजी म्हारा गुरु ओजी...॥टेर॥
ओजी गुरुजी, पाँच पच्चीस चल्या पाखारिया आतम करी है चढ़ाई ।
आतम राज करे काया मे, ऐसी ऐसी अदल जमाई ॥1॥
ओजी गुरुजी, सात शबद का मँड्या है मोरचा, गढ़ पर नाल झुकाई ।
ग्यान का गोला लग्या घट भीतर, भरमाँ की बुरज उड़ाई ॥2॥
ओजी गुरुजी, ज्ञान का तेगा लिया है हाथ मे, करमा की कतल बनाई ।
कतल कराइ भरमगढ़ भेल्या, फिर रही अलख दुहाई ॥3॥
ओजी गुरुजी, नाथ गुलाब मिल्या गुरु पूरा, लाला लगन लखाई ।
भानी नाथ शरण सतगुरु की, खरी नौकरी पाई ॥4॥

28:-

करमाँ रो संगाती राणा कोई नहीं-लाग्यो लाग्यो राम भजन से हेत ॥टेर॥
एक माँटी रा दोय घड़कल्या, जाँरो न्यारो न्यारो भाग।
एक सदाशिव कै जल चढ़ै, दूजो शमशाणा मँ जाय॥1॥
एक गऊ का दोय बाछड़ा, जाँरो न्यारो न्यारो भाग।
एक सदाशिव कै नाँदियो, दूजो बिणजारै रो बैल॥2॥
एक मायड़ रै दोय डीकरा, जाँरो न्यारो न्यारो भाग।
एक राजेश्वर राजवी, दूजो साधुड़ाँ रै लार॥3॥
राठौड़ाँ रै मीरा बाई जलमिया, बानै बैकुण्ठाँ रा बास॥4॥

29:-

हो घोड़े असवार भरथरी, बियाबान मँ भटक्या।
बन कै अन्दर तपै महात्मा,देख भरथरी अटक्या॥टेर॥
घोड़े पर से तुरत कूद कर, चरणां शीश नवाया।
आर्शीवाद देह साधू ने, आसन पर बैठाया॥
बडे प्रेम सँ जाय कुटी मँ, एक अमर फल ल्याया।
इस फल को तू खाले राजा, अमर होज्या तेरी काया॥
राजा नै ले लिया अमर फल, तुरत जेव मँ पटक्या।
बन कै अन्दर तपै महात्मा, देख भरथरी अटक्या॥1॥
राजी होकर चल्या भरथरी, रंग महल मँ आया।
राणी को जा दिया अमरफल, गुण उसका बतलाया॥
निरभागण राणी नै भी वो नहीं अमर फल खाया।
चाकर सँ था प्रेम महोबत उसको जा बतलाया॥
प्रेमी रै मन प्रेमी बसता, प्रेम जिगर मँ खटक्या।
बन कै अन्दर तपै महात्मा, देख भरथरी अटक्या॥2॥
उसी शहर की गणिका सेती, थी चाकर की यारी।
उसको जाकर दिया अमरफल थी राणी सँ प्यारी॥
अमर होयकर क्या करणा है, गणिका बात बिचारी।
राजा को जा दिया अमरफल,इस को खा तपधारी॥
राजा नै पहचान लिया है, होठ भूप का छिटक्या।
बन कै अन्दर तपै महात्मा, देख भरथरी अटक्या॥3॥
क्रोधित होकर राज बोल्या, ये फल कित सँ ल्याई।
गणिका सोच्या ज्यान का खतरा, साँची बात बताई॥
चाकर दीन्या भेद खोल, जद होणै लगी पिटाई।
हरिनारायण शर्मा कहता, बात समझ में आई॥
उपज्जा ज्ञान भरथरी को जद, बण बैरागी भटक्या।
बन कै अन्दर तपै महात्मा, देख भरथरी अटक्या॥4॥

30:-

मेवाड़ी राणा, भजनाँ सँ लागै मीरा मीठी।उदयपुर राणा, भजनाँ सँ लागै मीरा मीठी॥टेर॥
थारो तो राम म्हानै बतावो, नहीं तो फकीरी थारी झूठी॥1॥
म्हारो तो राम राणाजी घटघट बोलै, थारै हिये की कियाँ फूटी॥2॥
सास नणद दोराणी, जिठाणी, जलबल भई अंगीठी॥3॥
थे तो साँवरिया म्हारै सिर का सेवरा, म्हें थारै हाथकी अंगूठी॥4॥
सँकडी गली मँ म्हानै गिरधर मिलियो, किस बिध फिरुँ मैं अपूठी॥5॥
बाई मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चढ़ गयो रंग मजीठी॥6॥

31:-

सादा जीवन सुख से जीना, अधिक इतराना ना चाहिए।
भजन सार है इस दुनियाँ में, कभी बिसरना ना चाहिये॥टेर॥
मन में भेदभाव नहीं रखना, कौन पराया कुण अपना।
ईश्वर से नाता सच्चा है, और सभी झूठा सपना॥
गर्व गुमान कभी ना करना, गर्व रहै ना गले बिना।
कौन यहाँ पर रहा सदा सें, कौन रहेगा सदा बना॥
सभी भूमि गोपाल लाल की, व्यर्थ झगड़ना ना चाहिये॥1॥
दान भोग और नाश तीन गति, धन की ना चोथी कोई।
जतन करंता पच् मरगा, साथ ले गया ना कोई॥
इक लख पूत सवा लाख नाती, जाणै जग में सब कोई।
रावण के सोने की लंका, साथ ले गया ना कोई॥
सुक्ष्म खाना खूब बांटना, भर भर धरना ना चाहिये॥2॥
भोग्यां भोत घटै ना तुष्णा, भोग भोग फिर क्या करना।
चित में चेतन करै च्यानणो, धन माया का क्या करना॥
धन से भय विपदा नहीं भागे, झूठा भरम नहीं धरना।
धनी रहे चाहे हो निर्धन, आखिर है सबको मरना॥
कर संतोष सुखी हो मरीये, पच् पच् मरना ना चाहिये॥3॥
सुमिरन करे सदा इश्वर का, साधु का सम्मान करे।
कम हो तो संतोष कर नर, ज्यादा हो तो दान करे॥
जब जब मिले भाग से जैसा, संतोषी ईमान करे।
आड़ा तेड़ा घणा बखेड़ा, जुल्मी बेईमान करे॥
निर्भय जीना निर्भय मरना ,'शंभु' डरना ना चाहिये॥4॥

32:-

हर भज हर भज हीरा परख ले, समझ पकड़ नर मजबूती ।
अष्ट कमल पर खेलो मेरे दाता, और बारता सब झूठी ॥टेर॥
इन्द्र घटा ज्यूँ म्हारा सतगुरु आया,आँवत ल्याया रंग बूँटी।त्रिवेणी के रंग महल में साधा लाला हद लूटी 1
इण काया में पाँच चोर है, जिनकी पकड़ो सिर चोटी ।
पाँचवाँ ने मार पच्चीसाँ ने बसकर, जद जाणा तेरी बुध मोटी ॥2॥
सत सुमरण का सैल बणाले, ढ़ाल बणाले धीरज की काम, क्रोध ने मार हटा दे, जद जाणा थारी रजपूती 3
झणमण झणमण बाजा बाजै, झिलमिल
झिलमिल वहाँ ज्योति ओंकार के रणोकार में हँसला चुग गया निज मोती ॥4॥
पक्की घड़ी का तोल बणाले, काण ने राखो एक रती ।
शरण मच्छेन्द्र जति गोरक्ष बोल्या, अलख लख्या सो खरा जती ॥5॥

33:-

होज्या होशियार गुरांजी के शरणै, दिल साबत फिर डरना क्या ॥टेर॥
करमन खेती धणियाँ सेती, रात दिनां बीच सोवणा क्या ।
आवेगा हंसला चुग जायेगा मोती, कण बिन मण निपजाओगा क्या ॥1॥
कांशी पीतल सोना हो गया, पता चल्या गुरु पारस का ।
घर चेतन के पहरा दे ले, जाग – जाग नर सोना क्या ॥2॥
नौ सौ नदियाँ निवासी नाला, खार समुद्र जल डूंगा क्या ।
सुषमण होद भर्या घट भीतर, नाड़ूल्याँ में न्हाणा क्या ॥3॥
चित चौपड़ का खेल रच्या है, रंग ओलख ल्यो स्यारन का ।
गुरु गम पासा हाथ लग्या फिर, जीती बाजी हारो क्या ॥4॥
रटले रे बंदा अलखजी री वाणी, हर ने लिख्या सो मिटना क्या ।
शरण मच्छेन्द्र जती गोरक्ष बोल्या, समझ पड़ी फिर डिगना क्या ॥5॥

34:-

साँई कै नाम बिन कोनी निस्तारा, जाग जाग नर क्या सोता,
जागत नगरी में चोर कोनी लागै, झक मारै तेरा जमदूता॥टेर॥
जप कर तपकर कोटि यतन कर, कासी जाय करोत ले ले।
भजे बिना तेरी मुक्ति न होसी, भजले जोगी अवधूता॥1॥
जोगी होकर जटा बढ़ाले अन्ग रमाले भभूता।
जोग जुगत की सार कोनी जाणै, जोग नहीं तेरा हठ झूठा॥2॥
जिनकी सुरता लगी भजन में, काल जाल से नहीं डरता।
अधर अणी पर आसन रखता, से जोगी है अवधूता॥3॥
सोवतड़ा नर भोगै चौरासी, जागतड़ा नर जुग जीत्या।
रामनन्दजी का भणै कबीरा, मझलाँ मझलाँ जाय पहुँच्या॥4॥

35:-
दिल अपणै में सोचले समझ , दुख पावै जान। मेरी नाथ बिना, रघुनाथ बिना॥टेर॥
आई जवानी भया दीवाना, बल तोले हस्ती जितना।
यम का दूत पकड़ ले जासी, जोर न चाले तिल जितना॥1॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, झूठी माया घर अपना।
कई बार पुत्र पिता घर जनमें, कई बार पुत्र पिता अपना॥2॥
कुण संग आया, कुण संग जासी, सब जुग जासी साथ बिना।
हंसला बटाऊ तेरा यहीं रह जासी, खोड़ पड़ी रवे सांस बिना॥3॥
लखै सरीसा, लख घर छोड्या, हीरा मोती और रतना।
अपनी करणी, पार उतरणी, भजन बणायो है कसाई सजना॥4॥
36:-
नर छोड़ दे कपट के जाल, बताऊँ तनै तिरणे की तदबीर ॥टेर।
हरि की माला ऐसे रटणी, जैसे बांस पर चढज्या नटनी,
मुश्किल है या काया डटनी, डटै तो परले तीर॥1॥
गऊ चरणे को जाती बन मे, बछडे को छोड़ दिया अपणे भवन मे,
सुरत लगी बछड़े की तन मे, जैसे शोध शरीर॥2॥
जल भरने को जाती नारी, सिर पर घड़ो घड़ै पर झारी,
हाथ जोड़ बतलावे सारी, मारग जात वही॥3॥
गंगादास कथै अविनाशी, गंगादास का गुरु संयासी,
राम भजे से कटज्या फांसी, कालु राम कहीं॥4॥
37:-
भरत पियारा मेरो नाम हनुमान, नाम हनुमान मेरो॥टेर॥
कौन दिशा से आयो भाई, इस पहाड़ को करसीं कांई.
देख लेई तेरी प्रभुताई, झेल्यो मेरो बाण॥1॥
लंकापुरी से आयो भाई, लक्षमणजी ने मुरछा आई.
रावण सुत ने बाण चलायो, मार्यो शक्ति बाण॥2॥
कहो भरत क्या जतन उपाऊँ, लँगड़ा कर दिया कैसे जाऊँ.
संजीवन कैसे पहुँचाऊँ उदय होसी भान॥3॥
आवो बाला बैठो बाण पे, तन्ने पहुँचा दूँ लंका धाम में.
ऐसी मेरे जचै रही ध्यान में बाण विमान॥4॥
ले संजीवन हनुमत आये, लछमण जी नै घोल पिलाये.
सुखीराम भाषा मे गाये, चरणो में ध्यान॥5॥

38:-

निन्द्रा बेच दू कोई ले तो, रामो राम रटे तो तेरो मायाजाल कटेगी॥टेर॥
भाव राख सतसंग में जावो, चित में राखो चेतो।
हाथ जोड़ चरणा में लिपटो, जे कोई संत मिले तो॥1॥
पाई की मण पाँच बेच दू, जे कोई ग्राहक हो तो।
पाँचा में से चार छोड़ दू, दाम रोकड़ी दे तो॥2॥
बैठ सभा में मिथ्या बोले, निन्द्रा करै पराई।
वो घर हमने तुम्हें बताया, जावो बिना बुलाई॥3॥
के तो जावो राजद्वारे, के रसिया रस भोगी।
म्हारो पीछो छोड़ बावरी, म्हे हाँ रमता जोगी॥4॥
ऊँचा मंदिर देख जायो, जहाँ मणि चवँर दुलाबे।
म्हारे संग क्या लेगी बावरी, पत्थर से दुख पावे॥5॥
कहे भरतरी सुण हे निन्द्रा, यहाँ न तेरा बासा।
म्हें तो रहता गुरु भरोसे, राम मिलण की आशा॥6॥

39:-

इण आंगणियै मे ए। कई खेल्या कई खेलसी। कई खेल सिधारया ए ॥टेर॥
आवो पाँच सहेलियो म्हारा सीम दो न चोला ए।
मै हूँ अबला सूंदरी, मेरा सहिब भोला ए॥1॥
एक छिनौला, दूजी कूबड़ी, तीजी नाजुक छोटी ए।
नैण हमारा यूँ झरे ज्यों गागर फूटी ए॥2॥
जाय उतारै हरिये बड़ तलै, संगी कुरलाया ए।
थे घर जाओ भैणा आपणै, म्हे भया पराया ए॥3॥
काजी तो महमद यूँ कया अब यहाँ नहीं रहणा ए।
आया परवाना श्याम का, सखी यहाँ से चलणा ए॥4॥

40:-

मनमोहन थारी लागै छवि प्यारी, बिरत में बाँसुरी बाजी।
बासुरी बाजी बिरज में, मुरलिया बाजी, मनमोहन थारी लागै॥टेर॥
मीरा महलाँ ऊतरी रै, छाया तिलक लगाय। बतलाई बोलै नहीं रै, राणो रहो रिसाय॥1॥
राणो मीरा पर कोपियो रै, सूँत लई तलवार। मार्यां पिराछट लागसी रै, पीवर दयो पहुँचाय॥2॥
मीरा ऊबी गोखड़ाँ रै, ऊँटाँ कसियो भार। दाँवो छोड़्यो मेडतो रै, सीधी पुष्कर जाय॥3॥
जहर पियालो राणो भेजियो रै, दयो मीरा नै जाय। कर चरणामृत पी गई रै, थे जाणो रघुनाथ॥4॥
सर्प पिटारो राणो भेजियो रै, दयो मीरा नै जाय। खोल पिटारो मीरा पहरियो रै, बण गयो नौसर हार॥5॥
मीरा हर की लाड़ली रै, राणो बन को ठुँठ। समझायो समझ्यो नहीं रै, लेज्याती बैकुण्ठ॥6॥

41:-

भाई रे मत दीजो मावड़ली ने दोष, कर्मा की रेखा न्यारी॥टेर॥
भाई रे एक बेलड़ के तूम्बा चार, चारा री करणी न्यारी न्यारी।
भाई रे पहलो गुराँसा रे हाथ, दूजोडो मृदंग बाजणो।
भाई रे तीजो तम्बुरा वाली बीण, चोथोडो भीक्षा मांगणो॥1॥
भाई रे एक गऊ के बछड़ा चार, चारा री करणी न्यारी न्यारी।
भाई रे पहलो सुरजमल रो सांड, दूजोडो शिव को नान्दियो।
भाई रे तीजो यो धाणी वालो बैल, चोथोड़ो बालद लादनो॥2॥
भाई रे एक माटी का बर्तन चार, चारा री करणी न्यारी न्यारी।
भाई रे पहले में दहिड़ो जमावे, दूजो तो शिव के जल चढ़े।
भाई रे तीजो पणिहार्या रे शीश, चोथोड़ो शमशान जायसी॥3॥
भाई रे एक मायड़ के पुत्र चार, चारा री करणी न्यारी न्यारी।
भाई रे पहलो राजाजी री पोल, दूजोड़ो हीरा पारखी।
भाई रे तीजो यो हाट बजार, चोथोड़ो भीक्षा मांगसी॥4॥
भाई रे कह गया कबीरो धर्मीदास, कर्मारा भारा मेटयो॥5॥

42:-

म्हारा सतगुरु देयी है बताय, दलाली हीरा लालन की॥टेर॥
लाल पड़ी चौगान में, रही कीच लपटाय।
नुगरा माणंस ठोकर मारी, सुगरै ने लेई है उठाय॥1॥
हीरा पन्ना की कोठड़ी रे, गाहक हो तो खोल।
आवेगा कोई संत विवेकी, लेगा बे मंहगे मोल॥2॥
लाल लाल तो सब कहे रे, सब के पल्ले लाल।
गांठ खोल देखे नहीं रे, इस बिध भयो कंगाल॥3॥
लाली लाली सब कहे रे, लाली लखे न कोय।
दास कबीर लाली लखीरे, आवा गमन मिटाय॥4॥

43:-

मिनख जमारो बंदा ऐलो मत खोवै रे, सुखरत करले जमारा नै.
पापी के मुख से राम कोनी निकसै, केशर घुल रही गारा में ॥टेर॥
भैस पद्मणी ने गैणों तो पहरायो, कांई जाणै पहरण हारा ने ।
पहर कौनी जाणै बा तो चाल कोनी जाणै रे, उमर गमादी गोबर गारा में ॥1॥
सोने के थाल में सूरी ने परोसी, कांई जाणै जीमन हारा ने ।
जीम कोनी जाणै बा तो जूठ कोनी जाणै रे, हुरड़ हुरड़ करती जमारा ने ॥2॥
काँच के महल में कुत्ती ने सुवाई, कांई जाणै सोवण हारा ने ।
सोय कोनी जाणै बा तो ओढ़ कोनी जाणै रे, घुस घुस मरगी गलियारा में ॥3॥
मानक मोती मुर्खा ने दीन्या, दलबा तो बैट गया सारा नै ।
हीरा की पारख जोहरी जाणै, कांई बेरो मुरख गँवारा नै ॥4॥
अमृतनाथजी अमर हो गया जोगी, जार गया काँचे पारा ने ।
भूरा भजन हरिराम का करले, हर मिलसी दशवां द्वारा में ॥5॥

44:-

सुखरासी एजी अविनाशी, अमर नगर का बासी ।सतगुरु सुख राशि, ऐजी अविनाशी ॥टेर॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तज के, तुरिया तत्व एक अविनाशी ।
भंवर गुफा में सेज गुरां की, तेज पुंज जहाँ प्रकाशी ॥1॥
बारह मास बसन्त रहे जहाँ, मेघ अमीरस झड़ ल्यासी ।
त्रिकुटी में भंवर गुंजार करत है, सुखमण तकिया है कासी ॥2॥
बिन दीपक वहाँ जोत जगत है, कोन भानु वहाँ प्रकाशी ।
अनहद शब्द धुन गुंजार करत है, बिन पग पायल झनकासी ॥3॥
पाप पुण्या की गम जँहा नाहीं, नहीं बठे त्रिगुण की फांसी ।
अगम अगाध अपार अगोचर, ऐसे देश का गुरु है वासी ॥4॥
अमृतनाथजी दयालु दया कर, ऐसो घर कब दिखलासी ।
दुर्गाशंकर प्रेम दीवाना, छुट गयी जमड़ारी फांसी ॥5॥

45:-

आंख बिना पांख बिना, बिना मुख नारी रे,नीचे रे घड़ुलियो, उपर पनिहारी ॥टेर॥
जल केरी कुडिया अगम केरी झारी रे ,माता कुवारी पिता ब्रह्मचारी ॥1॥
एक कुवटियो नौ सौ पनिहारी रे ,नीर भेरे सब न्यारी न्यारी ॥2॥
भर गया आगर सागर खीसक गयी क्यारी,आखं मसलती आवे पनिहारी ॥3॥
सावली सुरत जांकी बोली लागे प्यारी प्यारी ,भरी सभा में मुलकती नारी ॥4॥
गोरक्ष जति बोल्या उलटी बाणी रे,दूध का दूध पाणी का पाणी रे ॥5॥

46:-

सतगुरुवाँ से मिलबा चालो ऐ, सजो सिनगारो ॥टेर॥
नीर गंगाजल सिर पर डारो, कचरो परै विडारो ये ।
मन मैले ने मल मल धोल्यो, साफ हुवै तन सारो ये ॥1॥
गम को घाघरो पैर सुहागण, नेम को नाड़ो सारो ये ।
जरणा री गाँठ जुगत से दिज्यो, लोग हँसेगो सारो ये ॥2॥
सत की स्यालु ओढ़ सुहागण, प्रेम की पटली मारो ये ।
राम नाम को गोटो लगाकर, ज्ञान घूंघटो सारो ये ॥3॥
ओर पियो मेरे दाय कोनी आवै, पियो करुँ करतारो ये ।
मेरो पियो मेरे घट में बसत है, पलक होवे न न्यारो ये ॥4॥
नाथ गुलाब मिल्या गुरु पुरा, म्हाने दियो शबद ललकारो ये ।
भानी नाथ गुराँजी के शरणै, सहजाँ मिल्यो किनारो ये ॥5॥

47:-

चादर झीणी राम झीणी, या तो सदा राम रस भीणी॥टेर॥
अष्ट कमल पर चरखो चाले, पाँच तंत की पूणी। नौ दस मास बणताँ लाग्या, सतगुरु ने बण दीनी॥1॥
जद मेरी चादर बण कर आई, रंग रेजा ने दीनी। ऐसा रंग रंगा रंगरेजा, लाली लालन कीनी॥2॥
मोह माया को मैल निकाल्या, गहरी निरमल कीनी। प्रेम प्रीत को रंगलगाकर, सतगुरुवाँ रंग दीनी॥3॥
ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी, सुखदेव ने निर्मल कीनी। दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी, ज्यू की ज्यू धर दीनी॥4॥

48:-

तेरे गले को हार जंजीरो रे, सतगुरु सुलझावेगातेरी काया नगर में हीरो रै, हेरे से पावेगा॥टेर॥
कारीगर का पिंजरा रे, तने घड़ल्यायो करतार।शायर करसी सोधणा रै,
मुरख करे रे मरोड़,। रोष मन माँयले में ल्यावेगा॥1॥
मन लोभी, मन लालची रे भाई मन चंचल मन चोर।
मन के मत में ना चले रे, पलक पलक मन और, जीव के जाल घलावेगा॥2॥
ऐसा नान्हा चालिऐ रे भाई, जैसी नान्ही दूब।और घास जल जा जायसी रै,
दूब रहेगी खूब, फेर सावण कद आवेगा ॥3॥
साँई के दरबार में रे भाई, लाम्बी बढ़ी है खजूर।चढे तो मेवा चाखले रै,
पड़े तो चकना चूर, फेर उठण कद पावेगा॥4॥
जैसी शीशी काँच की र भाई, वैसी नर की देह।जतन करता जायसी रै,
हर भज लावा लेय, फेर मौसर कद आवेगा॥5॥
चंदा गुड़ी उडावता रे भाई लाम्बी देता डोर।
झोलो लाग्यो प्रेम को रै, कित गुड़िया कित डोर, फेर कुण पतंग उड़ावेगा॥6॥
ऐसी कथना कुण कथी रे भाई, जैसी कथी कबीर।जलिया नाहीं, गडिया नाहीं,
अमर भयो है शरिर। पैप का फूल बरसाबेगा॥7॥

49:-

मन्दिर जाती मीरां नै साँवरियो मिल गयो रै।गिरधर जादू कर गयो रै॥टेर॥

राणो मीरां नै सनझावै, के होयो थारै क्यूँना बतावै।

फीका पड़ गया नैण-फरक बोली मँ पड गयो रै॥1॥

आज मिल्या न्हानै गिरधारी, मन की बातां पूछी सारी।

नैणा कर गयो च्यार-क दिल कै तालो जड़ गयो रै॥2॥

राणो मीरां नै समझावै, बडा घराँ की लाज गमावै।

कुल कै लागै दाग, पति जीवतड़ों ही मर गयो रै॥3॥

श्याम सुन्दर है पति हमारा, सारे जग का बै रखवारा।

कहता राधेश्याम मीरां नै मोहन मिल गयो रै॥4॥

50:-

मैं तेरै रंग ओ साँवरा, मैं तेरै रंग राची॥टेर॥

सवा रंग चोला पहन सखी मैं, झुरमुट खेलण जाती।

झुरमुट खेलती नै मिल गयो सांवरो, मैं घाल मिली गत बाथी॥1॥

ओर सखी मद पी पी माती, मैं मद पिया बिन माती।

मैं मद पियो एक प्रेम भटी को, मस्त रही दिन राती॥2॥

और रा पिव परदेश बसत है, लिख लिख भेजै पाती।

मेरा पिया मेरे घट मे बसत है, बात करुं दिन राती॥3॥

सुरत निरत को दिवलो संजोयो, मनसा री कर लईबाती।

प्रेम घाणी को तेल संजायो, जग्यो दिन राती॥4॥

जाउंना पिवर्यि रहुँ ना सारियै, सतगुरु शब्द सुनाती।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरिचरण मँ चित लाती॥5॥

51.

निन्द्रा बेच दू कोई ले तो, रामो राम रटे तो तेरो मायाजाल कटेगी॥टेर॥

भाव राख सतसंग में जावो, चित में राखो चेतो।हाथ जोड़ चरणा में लिपटो, जे कोई संत मिले तो॥1॥

पाई की मण पाँच बेच दू, जे कोई ग्राहक हो तो।पाँचा में से चार छोड़ दू, दाम रोकड़ी दे तो॥2॥

बैठ सभा में मिथ्या बोले, निन्द्रा करै पराई।वो घर हमने तुम्हें बताया, जावो बिना बुलाई॥3॥

के तो जावो राजद्वारे, के रसिया रस भोगी।म्हारो पीछो छोड़ बावरी, म्हे हाँ रमता जोगी॥4॥

ऊँचा मंदिर देख जायो, जहाँ मणि चवँर दुलाबे।म्हारे संग क्या लेगी बावरी, पत्थर से दुख पावे॥5॥

कहे भरतरी सुण हे निन्द्रा, यहाँ न तेरा बासा।म्हें तो रहता गुरु भरोसे, राम मिलण की आशा॥6॥

52:-

औरे म्हारा नटवर नागरिया भगता कै क्यू नहीं आयो रै ॥टेर॥
धनो भगत के भगत पूरबलो जिनको खेत निपजायो रै।
बीज लेर साधां नै बाँट्यो बिना बीज निपजायो रै॥1॥
नामदेव थारो नानो लागै ज्यांको छपरो छायो रै।
मार मण्डासो छाबण लाग्यो लिछमी जूण खिंचायो रै॥2॥
सेन भगत थारो सुसरो लागै ज्यांको कारज सार्यो रै।
बगल रछानी नाई बणगो, नृप को शीश सवार्यो रै॥3॥
परसो खाती थारो पूरखो लागै ज्यांको पैड़ो पूठ्यो रै।
बिना बुलायै आपै आयो रात्यूं लकड़ो कूट्यो रै॥4॥
कबीरा काँई थारो काको लागै ज्यांघर बालम ल्यायो रै।
खांड खोपरा गिरी छुहारा आप लदावन आयो रै॥5॥
भिलणी काई थारी भुवा लागै जिणरो झूठो खायो रै।
ऊंच-नीच की कान न मानै रुच रुच भोग लगायो रै॥6॥
करमा कांई थारी काकी लागै जिणरो खीचड खायो रै।
धाबलियै को पड़दो दीन्यो रुच रुच भोग लगायो रै॥7॥
मीरा कांई थारी मासी लागै जिणरो विष तूं जार्यो रै।
राणो विषको प्यालो भेज्यो विष इमरत कर डार्यो रै॥8॥

53:-

करो ना विघ्न सब दुर ओ सालासर वाला।
ओ सालासर वाला करो ना विघ्न सब दूर॥टेर॥
सालासर में भवन विराजे, झालर शंख नगारा बाजै।
द्वारे थारे नौपत बाजे, चढ़ता है घीरत सिन्दूर॥1॥
थे बजरंगी हो मण्डल मोटे पाँव भुजा बल दण्डन।
दाना मारके कर दिया खण्डन, कर दिया चकनाचूर॥2॥
रामचन्द्र जी के सार दिए काजा, पानी उपर बोध दिया पाजा।
रावण सरीसा मार दिया राजा, मुखड़े से, बरसै है नूर॥3॥
बालाजी ने सभी मनावें, मन ईच्छा भोजन फल पावे।
बदरीदास बिरामण गावे, देवोजी विद्या भरपुर॥4॥

54:-
मेरी छोटी सी है नाव, तेरे जादु भरे पांव, मोहे डर लागे राम, कैसे बैठाउँ तुझे नाव में॥टेर॥
जब पत्थर से बन गई नारी, यह है लकड़ी की नाव हमारी,मेरी यही रुजगार, पालूँ सब परिवार।
सुनो सुनो जी सरकार, कैसे बैठाऊँ...॥1॥
एक बात मानो तो बैठाल्यूँ, तेरे चरणों की घूल निकालूँ।मेरा भरम होज्या दूर,
अगर यह आपको मन्जूर,सुनो सुनो जी हजूर, पोंछ बैठाऊँ तुझे नाव में॥2॥
बड़े प्रेम सहित पांव घोये पाप जन्म के खोये,कियो राम दरसन,
हुआ मन परसन, संग सिया लछमन, बैठा ज्यावो मेंरी नाव में...॥3॥
धीरे धीरे से नाव चलाता, बोतो गीत खुशी के गाता,ऐसे सोचे मन में,
सूरज डूबे दिन में, राम ना जाये वन में, बैठे रहें मेरी नाव में...॥4॥
लेलो लेलो मल्लाह उतराई, मेरे पास अंगूठी है भाई,इसे करो स्वीकार,
तेरी होगी जय-जयकार, तेरा बेडा होगा पार, बैठ आये हैं तेरी नाव में...॥5॥
जैसे तुम खिवैया वैसे हम हैं, भाई भाई सँ लेना शरम है,मैंने नदी की है पार,
करना भवसागर से पार,परमानन्द की पुकार, हमें भी बैठाना अपनी नाव में...॥6॥
55:- थारी करैगो कुण होड़, ओ रावलिय जोगी ।भोग दिया सब छोड़, जी फकीरी भोगी ॥टेर॥
गांव दुनी की विपदा हारी, अपने तन की नाही विचारी ।
जाण पराई जी खोड़, ओ रावलिया जोगी ॥1॥
भोग छोड़ तन जोग जगायो, काचो पारो उदर जरायो ।
तनिक न मन में मरोड़, ओ रावलिया जोगी ॥2॥
सांचो गौरक्ष पंथ बतायो, मुक्ति को मार्ग दर्शायो ।
सुलझाया सब झोड़, ओ रावलिया जोगी ॥3॥
अमृतनाथजी अमर जस थारो, तन धन की तृष्णा निखारो ।
शंभु कहे कर जोड़, ओ रावलिया जोगी ॥4॥
56:- सतगुरुजी के शरणै सेती म्हारा जनम मरण का भय मिट ग्या ।
लख चौरासी का आणाजाणा, पल भर में दुख हरलेग्या ॥टेर॥
पाँच, पच्चीसों, चोर मारके, ठग नगरी सारी तजग्या ।
छोड़ दिया नेम, आचार, यग तप, काल बली का भय मिटग्या ।
कागा से गुरु हंसा करग्या, पत्थर से पारस करग्या ।
माणक मोती सारा तज के, बडे मोल हीरा बणग्या ॥2॥
त्रिवेणी में न्हाय धोय कर, कागा से हंसा बणग्या ।
बंकनाल की घाटी चढ़के, अमरलोक में पग धरग्या ॥3॥
अमृतनाथजी दया करो दयाला, नैणन का लटका करग्या ।
दुर्गाशंकर दास गुरां का, चरणा का चाकर बणग्या ॥4॥

57:-
सुख थोड़े दुःख घणे जगत मँ, भोग्यां कष्ट सरै राणी।
किस किस के दुःख दूर करै, या दुनियाँ दुःखी फिरै राणी॥टेर॥
कीड़ी कण बिन, हाथी मण बिन, नागिण फण बिन दुखिया सै।
चकवी मिलन बिन, बाँझ जणन बिन, सती सजन बिन दुखिया सै।
केहरी बन बिन, सूरा रण बिन, भुखा अन बिन दुखिया सै।विषय भोग बिन,
इन्द्री मन बिन, कंगला धन बिन दुखिया सै।
पंछी गगन बिन दुखिया सै जो पिंजरै आन घिरै राणी॥1॥
मात कुलछणी, मुरख बेटा, फूवड़ नारी दुःखी करै।
बाप कै मौसी, बुरा पड़ोसी, ओछी यारी दुःखी करै चुगली चर्चा, जुआ जामनी,
चोरी जारी दुःखी करै।पट पर खेती, फसल पछेती,
कोढ़ी क्यारी दुःखी करै। गुप्त बिमारी दुखी करै जब चिन्ता चित्त चरै राणी॥2॥
खेत उगाला माह मँ पाला, खुण्डा फाला दुःखी करै।
भीत मँ आला, पछीत मँ खाला, घर मँ साला दुखी करै।
थोथा नाला दे काढ़ दिवाला, बिगड़्या ताला दुखी करै।
दाल मे काला, पाँव मँ छाला, आँख मँ जाला दुखी करै।
खर्च कुढाला दुखी करै, यो कर्जा दुखी करै राणी॥3॥
बालू की भींत, नीच की बस्ती, गाल मचोड़ा दुखी करै।
कड़वो भैंस बोलणी ऊँटणी, बैल लतोड़ा दुःखी करै।
मंजिल दूर की, बोझ घणा हो, जाथर थोडा दुखी करै।
खोरी झोटाँ, साँड़ मारणा, अड़ियल घोड़ा दुखी करै।
रग पर फोड़ा दुखी करै, यो फूटै और भरै राणी॥4॥
गरीब सताना, रोब जमाणा, क्रोध जगाणा दुखी करै।
मैला सा बाणा लागै लाणा, गाँव मँ थाणा दुखी करै।
गलती मँ आणा, स मँ उलाणा, बैर पुराणा दुखी करै।
ज्यादा खाणा, पैदल जाणा, दूर सिमाणा दुखी करै।
सुर बिन गाणा दुखी करै, यो न्यु जगदीश डरै राणी॥5॥

58:-
सतगुरु मेरा ऐसा रंग चढ़ाया,गुराँसा ऐसा रंग चढ़ाया ।
जो न उतरे तीनकाल में, दिन दिन होत सवाया ॥ टेर॥
श्याम श्वेत पीला नहीं नीला, अदभुत वर्ण बनाया ।
नेत्र नहीं पहचान सकत है, गुरु गम भेद लखाया ॥1॥
हृदय वस्त्र पर रंग भक्ति का, लागत परम सुहाया ।
ज्ञान विज्ञान लहरिया किन्हां, ओढ़ परम सुख पाया ॥2॥
छीपी छाप सकै नहीं वैसा, ना रंगरैज रंगाया ।
कहन सुनन में आवत नाहीं, सतगुरु सैन बताया ॥3॥
चम्पानाथजी प्रेम के रंग में, रंग कन्था पहिनाया ।
सहज सून्य में लगी समाधि, बठै अमृतनाथजी सुहाया॥4॥
59:-
रामनाम वाले झूझंनियो मेरा सतगुरु आय बजाय दियो ॥टेर॥
मन्ने मेरा सतगुरु पूरा मिलग्या, मन भरमी ने घायल कियो ।
मारी रे चोट शबदड़ारी तन पे, मन मस्ताने ने मार दियो ॥1॥
पहली रे नाम नाम से लीन्यो, कंठ कमल में ठहराय दियो ।
कंठ कमल की रे अगलोडी घाटी, बंकनाल में बाड़ दियो ॥2॥
सुन्न शिखर के रंग महल में, बादल ज्यूँ गुरराय रयो ।
झिरमिर झिरमिर अमृत बरसे, ई अमृत ने खाय रयो ॥3॥
तन के ऊपर अखि सुन्य है, बिन सूरज चमकाय रयो ।
शरण मछेन्दर जति गोरक्ष बोल्या, आप में आप समाय रयो ॥4॥
60:-
खोलदे भरम की टाटी सत्तगुरु पार लगावो घाटी ।
हरका लाडला रै हंसला आयो है पण जावोला किणघाटी ॥टेर॥
कूण नगर सँ आयो म्हारो हंसलौ, कूण नगर नै जासी ।
कूण नगर घर शब्द उच्चारया, कूण नगर रम ज्यासी ॥1॥
नाभ नगर सँ आयो म्हारो हंसलौ, त्रिकुटी नगर नै जासी ।
सोवणी शिखर धर शब्द गुंजार्या अणोकार रम ज्यासी॥2॥
कुण्याँ नै सूँप्या वेद कमंडल, कुण्या नै सूँपी झारी ।
कुण्याँ नै सूँप्या भगवाँ वस्तर, कूण बण्या ब्रह्मचारी ॥3॥
ब्रह्मा नै सूँप्या वेद कमंडल, विष्णु नै सूँपी झारी ।
पार्वती नै भगवाँ वस्तर, आप बणें ब्रह्मचारी ॥4॥
सूरज की करले ऊँची कूँची, चन्द्रमाँ की करले बाती ।
सवा हाथरो अन्चला घोले, तरबीण्या की घाटी ॥5॥
अठै तो मनवा फिरै भटकतो, आगै ओघट घाटी ।धर्मराय संग झिरमिट खेलै, कह गोरख अविनासी ॥6॥

61:-

हिण्डो तो घलादे सतगुरु म्हारा बाग मे जी।सतगुरु म्हारा, हिण्डे-हिण्डे सुरता नार ॥टेर॥
काया तो नगरिये मे सतगुरु म्हारा आमली जी।सतगुरु म्हारा छायी छायी च्याराँ मेर ॥1॥
अगर-चंदन को सतगुरु म्हारा पालणो जी।सतगुरु म्हारा रेशम डोर घलाय ॥2॥
पाँच सखी मिल पाणीड़े न निसरी जी।सतगुरु मेरा पाँचू ही एक उणियार ॥3॥
नाथ गुलाब से सतगुरु म्हारा विनती जी।सतगुरु मेरा गावै-गावै भानीनाथ ॥4॥

62:-

जोबन धन पावणा दिन च्यारा, गरव करै सो गँवारा॥टेर॥
पशु चाम की बणत पहनिया, नौबत मँढ़त नगारा।नर तेरी चाम काम नहीं आवै, जलबन होत अंगारा॥1॥
हाड़ रै चाम का बण्या पींजरा भीतर भर्या भंगारा।ऊपर रंग सुंरग लगाया, कारीगर करतारा॥2॥
बीस भूजा दस मस्तक जिनके, पुत्र धणा परिवारा।ऐसे मर्द गरद में मिले गये, लंका के सरदारा॥3॥
यो संसार ओस को मोती, गलताँ लागै न बारा।कहत कबीर सुणो भाई साधो, हर भज उतरो पारा॥4॥

63:-

काया नगर मझांरा रे हंसला, जिन खोज्या निसतारा॥टेर॥
लागी लगन हिये बिच गहरी, कुण है मेटन हारा।
मस्तक ऊपर लिखी फकीरी, लेख लिख्या करतारा॥1॥
सिंह और सियार दोनों रहता वन में, चरता न्यारा न्यारा।
एक दिन मेल मिल्यो मछली को, सिंह ने सियार सुधार्या॥2॥
गगन मण्डल बिच उड़द मुखी कुवा, झरे अमृत का झारा।
सुगरा सुगरा पीके छिकिया, प्यासा जाय गंवारा॥3॥
महर हूई जद सतगुरु मिल्या खोल्या भरत का ताला।
जालमगिरी सतगुरांजी के शरणै, राम भज्या निसतारा॥4॥

64:-

जीवन जेवड़ी रा दुख सुख आता, आजा उमर हालो नाको।भाई मेरा दिन दिन होरयो पाको॥टेर॥
पहली तो तूँ भाई कुहालियो पछे कुहालियो काको।
काको कुहाले चाये बाबो कुहाले अन्त पन्थ बिगडेगो खाखो॥1॥
तरुण भया जणा तिरिया पुरुष को पंचा मिला दियो जाको।
घर ग्रहस्ती की गाड़ी वणगो दिन छिपगो अब हाको॥2॥
जद घर मै खूब कमाकर लावै कहे सपूत निज माँ को।
बढो हो जावे हीड़ो करावै अब ईवै दरड़ै में नाखो॥3॥
सुख पावे जणा अकल सरावै म्हे ही धिकाबा म्हारो नाको।
दुख पावे जणा रोवे करम ने, लगादे राम कै लाको॥4॥
दुख सुख का दोय तार उधेडो एक तार कर राखो।
माधो कह दुई को दागो, काम दुनिया को बांको॥5॥

65:-

हाँ देवकी के जतन बणाऊँ मै।इस बालक नै गोकुल मँ किस ढाल पहुँचाऊँ मैं॥टेर॥
गल मँ तोख पड़्या मेरै हाथ हथकड़ी जड़ी हुई।हाल्या चाल्या जाता ना, पायाँ मँ बेड़ी पड़ी हुई।
साँकल ताले सब भिडरे, चौगड़दै फाटक जड़ी हुई।कंस का सै पहला भारी, बाहर पहरेदार खड़े।
हाथ मँ खड़ग लेके हो के न हुँशयार खड़े।मतवाले से हाथी कुत्ते, दरवाजे से बार खड़े।
हाँ निकल किस तरियाँ जाऊँ मैं- मेरी खुलै हथकड़ी बेड़ी फेर तो ना घबराऊँ मैं॥1॥
बासदेव मन में घबराया, काया में बेदन सी छिड़गी।ईश्वर के करने से लोगो, बेडी और हथकड़ी झड़गी।
ऐसी फिरी हरी की माया पहरेदारों पर माटी पड़गी।दोनुआँ का मन बढ़्या, देख के न ऐसा हाल।
देवकी ने चा मँ भरके, पालणै सुवाया लाल।कृष्णजी नै सिर पै धरकै, चाल पड़्या महीपाल।
हाँ देवकी तनै समझाऊँ मैं- तू ईश्वर रटती रहिये जब तक वापस आऊँ मैं॥2॥
वासदेव चाल पड़्या देवकी से करके बात।भादवै की काली पीली, गरजै थी अंधेरी रात।
बेटे हाले चा मँ भरके, समझ्या कोनी अपना गात।आगे जमना भरी गुई, पीछै सिंह बोल रह्या।
कंश के बोलाँ का तीर, कालजै नै छोल रह्मा।किस तरियाँ तैं जाया जागा, राजा का दिल डोल रह्या। हाँ प्रभु तेरा सुकर मनाऊँ मैं- यो बालक बचना चाहिये बेसक ते मर ज्याऊँ मैं॥3॥
बासदेव चाल पड़्या मन मँ करके सोच विचार।आगै सी नै पहूँचे राजा, बहे थी कसूती धार।
बासदेव भीतर बड़ग्या, देवता दल, नै छुछकार।आगे सी नै पहूँचे राजा, नाक तक पाणी आया।
पिताजी नै दुखी देख कृष्णजी नै पाँव लटकाया।चरण चूम कर उतरी जमना, ऐसी फिरी हरि की माया।
हाँ कथा आगै की गाँऊ मैं-कह बाजे भगत सुसाने के, इब गुरु मनाऊँ मैं॥4॥

66:-

मुझे है काम ईश्वर से जगत रूठे तो रुठन दे कुटुम्ब परिवार सुत दारा,
माल धन लाज लोकर की हरि के भजन करने में अगर टूटे तो टूटन दे॥टेर॥
बैठ संगत में संतन की, करुँ कल्यान मैं अपना।लोग दुनिया के भोगों में,मजे लूटे तो लूटन दे॥1॥
प्रभू के भजन करने की,लगी दिल में लगन मेरे।प्रीति संसार विषयों से, अगर टूटे तो टूटन दे॥2॥
धरी सिर पर पाप की मटकी, मेरे गुरुदेव ने झटकी।वो ब्रह्मानन्द ने पटकी अगर फूटे तो फूटन दे॥3॥

67:-

नहीं तो पीछाणी रै बीरा, एजी धारा दुर्बल भोत शरीरा॥टेर॥
ना तनै देख्यो पुरी अयोध्या, ना सरजू के तीरा। ना तनै देख्यो संग राम कै, है कोई छलगीरा॥1॥
ना देख्यो मोहे पुरी अयोध्या, ना सरजू के तीरा।
ना देख्यो मोहे संग राम कै, मैं अंजनी सुत बीरा॥2॥
सो योजन मरजाद सिन्धु की, किस बिध उतर्यो तीरा।
इस नगरी मँ राक्षस जबर है, किस बिध धार्यो धीरा॥3॥
लंका कूद बिलंका कूद्यो, उतर्यो सागर तीरा।
मार छलाँग गिरि सँ लाँध्यो, मैं हनुमत बलबीरा॥4॥
सेतु बांध रामेश्वर थरप्यो, चढ़े राम रणधीरा।
तुलसी दास धर धीर जानकी, आय चढे रघुवीरा॥5॥

68:-

गुरु बिन घोर अन्धेरा साधो गुरु बिन घोर अन्धेरा।
जैसे मंदिर दीप बिना सुना, ना वस्तु का बेरा ॥टेर॥
पत्थरी माही अग्नि बसत है, ना पत्थरी ने बेरा।चकमक चोट लगे पत्थरी पर, फैले आग चौफेरा ॥1॥
जब तक कन्या रहे कुंवारी, ना प्रीतम का बेरा।आठ पहर आलस में खोवै, खेले खेल घणेरा ॥2॥
मिरगे की नाभि बसे कस्तूरी, ना मिरगे ने बेरा।व्याकुल होकर बन में भंटके, सूंधे घास घणेरा॥3॥
नाथ गुलाब मिल्या गुरु पूरा, ज्ञान दिया बहूतेरा।भानीनाथ शरण सतगुरु की, पाया भाग भलेरा ॥4॥

69:-

राजा भरथरी से अरज करे, महलो में खड़ी महारानी |राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ||
नगर उज्जैन के राजा भरथरी हो घोड़े असवार |
एक दिन राजा दूर जंगल में खेलन गया शिकार |
विछड गए सारे संग के साथी राजा भये लाचार |
किस्मत ने जब करवट बदली छुटा दिए घरबार |
अब होनहार टाली न टले समझे कोनी दुनिया दीवानी |
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ||
काला सा एक मिरग देखकर तीर ताण कर मारा |
तीर कलेजा चीर गया मृग धरणी पे पड़ा बेचारा |
व्याकुल होकर हिरणी बोली ओ पापी हत्यारा |
मिरगे के संग में सती होवांगी हिरणी का डार विचारा |
अब रो रो के फ़रियाद करे राजा भये अज्ञानी |
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ||
राजा जंगल में रुदन करे गुरु गोरखनाथ पधारे |
मिरगे को प्राण दान दे तपसी राजा का जनम सुधारे |
उसी समय में राजा भरथरी तन के वस्त्र उतारे |
ले गुरुमंत्र बन गया जोगी अंग वभूति रमाये |
अब घर घर अलख जगाता फिरे बोले मधुर वाणी |
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ||
गुरु गोरख की आग्या भरथरी महलों में अलख जगाता |
भर मोतियन को थाल ल्याई दासी ले जोगी सुखदाता |
ना चाहिए तेरा माणक मोती चुठी चून की चाहता |
भिक्षा ल्यूँगा जद ड्योढ़ी पर आवेगी पिंघला माता |
अब राणी के नैना से नीर ढरे पियाजी की सुरत पिछाणी |

राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी |
भाग दोड़ के पति चरणों में लिपट गई महाराणी |
बेदर्दी तोहे दया नहीं आई सुनले मेरी कहानी |
बाली उमर नादान नाथ मेरी कैसे कटे जिंदगानी |
पिवजी छोडो जोग राज करो बोले प्रेम दीवानी |
थारे अन्न का भण्डार भरया थे रोज करो मनमानी |
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ||
धुप छाव की काया माया दुनिया बहता पाणी |
अमर नाम मालिक को रहसी सोच समझ अज्ञानी |
भजन करो भव सिन्धु तिरो यू कहता लिखमो ग्यानी |
नई नई रंगत गावे माधोसिंह आवागमन की ज्यानी |
अब राम का भजन करो सब प्यारे तेरी दो दिन की जिंदगानी |
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ||

70:-

म्हारा सावरा गिरधारी खीचड़ खाले रे बनवारी ,कर्मा विनती कर कर हारी बेटी जाटा री
बाबो दूजे गांव सिधायो थारो मंदिरियो संभलायो ,सारी पूजा ढंग सिखायो बेटी जाटा री
बेटी तड़के उठ के आईये म्हारे गिरधर ने नुह्वाईये ,पूजा करके भोग लगाइये बेटी जाटा री
मीठे पानी से नहलाईये ऊँचे आसन पर बैठाइए
लंबो केसर तिलक लगाइये बेटी जाटा री
जड़ के मंदिरिये में ताली कर्मा गीत गावति चाली
ल्याई खिचडलो भर थाली बेटी जाटा री
म्हारी भूल बता दयो सारी थे क्यों रुस्या कुञ्ज बिहारी
म्हाने गाल्या पड़सी खारी बेटी जाटा री
बाबो बार गाव से आवे म्हाने मुक्का से धमकावे
कर्मा आंसूड़ा ढल कावे बेटी जाटा री
सांवरा छाछ राबड़ी ल्याऊं मीठी गुड़ली खीर बनाऊ
उठके भोरा भोर जिमाउ बेटी जाटा री
आ के गर्दन काट चढाऊँ या ज़हर खाय मरजाऊ
तो भी थाने आज जिमाउ बेटी जाटा री
पर्दो धाबलियो रो कीन्ह्यो मोहन खिचडलो खा लीन्ह्यो
भोला भगतां दर्शन कीन्ह्यो बेटी जाटा री
बोल्या ठाकुर मीठी वाणी म्हाने पा दे ठंडो पानी
कर्मा थारी प्रीत पिछानी बेटी जाटा री
पाछो गाव चौधरी आयो कर्मा सारो हाल सुनायो
सुन के घणो अचम्भो आयो बेटी जाटा री

71:-
सांवरिया तेरा नाम हज़ार कय्याँ लिखु कुंकुपत्री
कोई कहे मुरली वालो कोई कहे बंसी वालो कोई कहे गाया रो ग्वाल
कोई कहे गोकुल वालो कोई कहे मथुरा वालो कोई कहे द्वारका रो नाथ
कोई कहे मीरां बाई को कोई कहे करमा बाई को कोई कहे गोपियाँ रो नाथ
कोई कहे नन्द जी को कोई कहे बासुदेव जी को कोई कहे नन्द जी रो लाल
कोई कहे देवकी को कोई कहे यशोदा को नरसी करे र पुकार कय्याँ लिखूं कुंकुपत्री
72:-
रामा चले त्रिलोकी बल छलने
बल छलने को चले नारायण ओढ़ी मोहन टोपी
हाथ डांगडी लेयी बांस की
दाबी बगल म सांवरो ब्रम्हा जी की पोथी
हाथ जोड़ बल राजा उभ्यों के धन मांगे जोशी
जो चावे सो मांग ले ब्राह्मण
लेसी सोही तेरे हाजिर होसी
तीन पांवडा भूमि दे दे बन कुट्य्या छोटी
तेरी नगरी को धरम बताऊ
बैठे बैठे बांचू म तो ब्रह्मा जी की पोथी
तीन पांवडा को के धन माग्यो काई गुजरो होसी
तुलसीदास आस रघुवर की
तीन पांवडा तेर कन पुरा कोनी होसी
73:-
पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे॥पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे॥
मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गै दासी रे।
पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।
लोग कहै मीरा भ बावरी न्यात कहै कुलनासी रे।
पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।
बिष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे।
पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अबिनासी रे।
पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।

74:-
इसमे कई आवे कई जाय मेला यूँ ही भरया रहे
मेला यूँ ही भरया रहे मेला यूँ ही भरया रहे
र मालिक तेरी कैसी गती है कोई भूखा कोई लाखपति है
कोई खरचे कोई खाय किसी का जोड़्या धरया रहे
इस मालिक के बाग़ बगीचे रोज इसे पानी से सींचे
कोई फुले फळ जयाय कोई सूखा कोई हरा रहे
किसी के घर पे रहे जनाजा किसी के बाजे नोपत बाजा
किसी के हो रहे मंगलाचार किसी के मुर्दा पड़्या रहे
रच दिया रोहितास ने ख्याल तज के मोह माया का जाळ
गाये हरदेवो हरी गुण गाय ये धन तेरा खरया रहे ।
75:-
खाटू वालो टिकेट कटादे म्हारा बलमा
में बैठ रेल में जाऊ रे बाबा श्याम धनि क
मेलो देखबा चालारे बाबा श्याम धनी के
मकराणा को मंदिर बन्यो रे
डयोडया पर हनुमान खड़्यो है
तेल सिंदूर चढ़ावा रे श्याम धनी के
श्याम कुंड को निर्मल पाणी
नहाया सफल हो जावे जिंदगानी
कूद कूद के नहावा रे
श्याम बगीची बनि अति सुंदर
चंपा चमेली खिल रही अंदर
फुला को हार चढावा रे
76:-
घट में बसे रे भगवान, मंदिर में काँई ढूंढ़ती फिरे म्हारी सुरता ॥टेर॥
मुरती कोर मंदिर में मेली, बा मुख से नहीं बोलै।
दरवाजे दरबान खड़्या है, बिना हुकम नहीं खोलै ॥1॥
गगन मण्डल से गंगा उतरी, पाँचू कपड़ा धोले ।
बिण साबण तेरा मैल कटेगा, हरभज निर्मल होले ॥2॥
सौदागर से सौदा करले, जचता मोल करालै ।
जे तेरे मन में फर्क आवेतो, घाल तराजू में तोले ॥3॥
नाथ गुलाब मिल्या गुरु पूरा, दिल का परदा खोले ।
भानीनाथ शरण सतगुरु की, राई कै पर्वत ओलै ॥4॥

77:-
झोली भरदे रे खाटू का बाबा श्याम
भिखारन तेरे द्वार खड़ी
तेरे जैसो और नही ह जगत बिच में दानी
म्हारे मन पर के बीते थे जानो अंतर्यामी
घर से चाली रे में धर चरणा को ध्यान
भिखारन तेरे द्वार खड़ी
सास ननद म्हारी दयोर् जिठानी बाँझ कह बतलावे
लागे तीर कालजे माहि बोल सहया न जावे
ताने मारे रे जीवन ना देवे झान
भिखारन तेरे द्वार खड़ी
खड़ी द्वार पर अरज करे थारे चरणा की दासी
थारे घर में कमी नही ह सुन ले खाटू वासी
बाबा देदे रे दुखियाँ ने सन्तान
भिखारन तेरे द्वार खड़ी
मोहन मनसा भरे भक्त की श्याम धनि दातार
सच्चे दिल जो कोई घ्यावे होज्या बेडा पार
भक्त ने दे दे रे यो मन चाहयो वरदान
भिखारन तेरे द्वार खड़ी
78:-
लाल लंगोटा बाबा हाथ में घोटा थारी जय हो पवनकुमार वारी जाऊ बालाजी
सालासर में थारो देवरो बाबा
मेहंदीपुर में थारो देवरो बाबा
कोई ध्वजा तो फरुके आसमान वारी जाऊ बालाजी
के लख आवे थारे जात्री बाबा
के लख बालुडा री माय वारी जाऊ बालाजी
9 लख आवे थारे जात्री बाबा
कोई 10 लख बालुडा री माय वारी जाऊ बालाजी
चेत सुदी पूनम को मेलो बाबा
कोई आवे नर और नार वारी जाऊ बालाजी
चढ़न चढ़ावे थारे चूरमो बाबा
कोई मंगल और शनिवार वारी जाऊ बालाजी
ताराचंद की विनती बाबा
कोई नैया लगाओ पार वारी जाऊ बालाजी

79:-
सतगुरु साहेब बंदा एक है जी
भोली साधुडा से किस्योड़ी भिरांत म्हारा बीरा रे
साध रे पियालो रल भेला पिव जी
धोबिड़ा सा धोव गुरु का कपडा रे
कोई तन मन साबण ल्याय म्हारा बिरा रे
तन रे सीला रे मन साबणा रे
ये तो मैला मैला धुप धुप जाय म्हारा बिरा रे
काया रे नगरिये में आमली रे
ज्या पर कोयालड़ी तो करे र किलोल
कोयलडया रे शबद सुहावना रे
बे तो उड़ उड़ लागे गुरु के पाँव म्हारा बिरा रे
काया रे नागरिये में हाटडी रे
ज्या पर बिणज करे साहूकार म्हारा बिरा रे
कई तो करोड़ी धज हो चल्या रे
कई गया ह जमारो हार म्हारा बिरा रे
सीप रे समन्दरिये में निपजे रे
कोई मोतिड़ा तो निपजे सीपा माय म्हारा बिरा रे
बूंद रे पड़ रे हरी के नाम की रे
कोई लखियो बिरला सा साध म्हारा बिरा रे
सतगुरु शबद उचारिया रे
कोई रटीयो साँस म साँस म्हारा बिरा रे
देव रे डूंगरपुरी बोलिया रे
जांका सत अमरापुर बास म्हारा बिरा रे
80:-
हरी न रूणीचो बसायो प्रभु न रुणीचो बसायो
द्वारिका से आय
पगा उभाणा गया तिरथां अन्न रति नहीं खायो
जाय द्वारका म डेरा कीन्हा
प्रभु जी के आगे बे तो रुदन मचायो रे
हाथ जोड़ अजमलजी बोल्या के म पाप कमायो
एक पुत्र जलम नहीं मेर
बैठ चरणा माहि बाँके नीर बहायो रे
इतनी कह बड़्या समदर म सिंघासन थाररायो

जद मालिक न दया उपजी
भाग्यो ही दोड्यो सांवरो पलका म आयो रे
रतनागर म नीर घणों है ठाकुर जी समझावे
माथे ऊपर जल फिरज्यागो
हटज्या भगत रामा हटजा हटायो रे
अजमल जी केणो नहीं माने आगो आगो ध्यायो
जद मालिक न दया उपजी
चतुर्भुज रूप साँवरो पल म दिखायो रे
भगत जाण के कारज सारया वचना को बंध्यो आयो
अजमल जी का जनम सुधारया
इसरदास अरठ रामा भजन बनायो रे

81:-

समझ मन मायला रे ,बीरा मेरा मेलोड़ी चादर धोय ,
बिन धोया दुख ना मिटे रे ,बीरा मेरा,तिरणा किस विध होय ।।
देवी सुमिरा शारदा रे ,बीरा मेरा हृदय उजाला होय ।
गुरवा के गम के मिल्या रे ,बीरा मेरा आदु आदु अस्त्र होय ।। 1समझ मन मायला रे ,
दाता चिनाई कुआ बावड़ी रे ,बीरा मेरानीर गंगा जल होय ।
हरिजन हरिजन नहा चल्या रे ,बीरा मेरा कई गया मुख मोड़ ।। 2 समझ मन मायला रे
रोहिड़ो रंग फुटरो रे ,बीरा मेरा फुल अजब रंग होय ।
उबो भिख्मी भोम में रे ,बीरा मेरा कलिया ना बिनजे कोय ।। 3 समझ मन मायला रे
चन्दन रंग को सांवलो रे ,बीरा मेरा मरम ना जाने कोय ।
काट्या कंचन निपजै रे ,बीरा मेरा महक सुंगधी होय ।। 4 समझ मन मायला रे
तन का बनाले कापड़ा रे ,बीरा मेरा मनसा री साबुन होय ।
ज्ञान सिला पर मार फटकारो रे ,बीरा मेरा सतगुरु देसी धोय ।। 5 समझ मन मायला रे ,
लिखमो लिख्मी भोम में रे ,बीरा मेरा गाँव गया गम खोय ।
तीजी पेड़ी लांघ ज्या रे ,बीरा मेरा चौथी में निर्भय होय ।। 6 समझ मन मायला रे ,बीरा मेरा मेलोडी चादर धोय ।हरी का लाडला रे बीरा मेरा तिरणा किस विध होय ।।

82:-
प्रभु जी मोरे अवगुण चित्त ना धरो
समदरसी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो
एक लोहा पूजा में राखत एक घर वधिक परो
पारस गुण अवगुण नहीं चित वे
कंचन करत खरो
एक नदिया एक नाल कहावत मेलों ही नीर भरो
जब दोनों मिल एक बरण भई
सुरसरी नाम परो
एक माया एक ब्रह्म कहावत सूर-श्याम झगड़ो
अबकी बार मोहे पार उतारो
नहीं प्रण जात टरो
83:-
मैं तेरै रंग राचीओ साँवरा, मैं तेरै रंग राची॥टेर॥
सवा रंग चोला पहन सखी मैं, झुरमुट खेलण जाती।
झुरमुट खेलती नै मिल गयो सांवरो, मैं घाल मिली गत बाथी॥1॥
ओर सखी मद पी पी माती, मैं मद पिया बिन माती।
मैं मद पियो एक प्रेम भटी को, मस्त रही दिन राती॥2॥
और रा पिव परदेश बसत है, लिख लिख भेजै पाती।
मेरा पिया मेरे घट मे बसत है, बात करुं दिन राती॥3॥
सुरत निरत को दिवलो संजोयो, मनसा री कर लईबाती।
प्रेम घाणी को तेल संजायो, जग्यो दिन राती॥4॥
जाउंना पिवरीये रहुँ ना सासरियै, सतगुरु शब्द सुनाती।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरिचरण मँ चित लाती॥5॥
84:-
काया नगर मझारा रे हंसला जिण खोज्या निस्तारा
लागी लगन हिये बिच गहरी कोन है मेटण वाला
मस्तक ऊपर लिखी फकीरी लेख लिख्या करतारा 1
सिंह और स्यार दोनूँ रहता वन म चरता न्यारा न्यारा
एक दिन मेळ मिल्यो मछली को सिंह न स्यार सुधारया 2
गगन मंडल विच उरद मुख कुआ बहे अमृत का झारा
सुगरा सुगरा पिव पिव छाक्या प्यासा जाय गवारां 3
महर भई जद सतगुरु मिलिया खोल्या भरम का ताला
जालिमगिरी सतगुरु शरणे राम भज्या निसतारा4

85:-

झीनों झिणों कजलो सार ले सुहागण तेल रमाले केशा म
पांच र पच्चीस थाने खड़या रे उडिके चाल रे दिवानी उन देशा म
गगन मंडल म घल्या रे हिंडोला रेशम डोर छिटके न्यारी
सुरत निरत हिंडण बेठ्या झोटा देव सांवरो गिरधारी 1
धोला धोला वस्त्र छोड़ दयों सुहागण भगवा वस्त्र ल्यो प्यारी
भगवा म भगवान मिलेगा बठ तो कटेली थारी चोरासी 2
पिवारिये बसबो छोड़ दे सुहागण सासरिये बस ज्याओ प्यारी
सासरिये रा लोग भालेरा जिण संग मोज़ा है भारी 3
आठ्ह नोम्यु आव र दड़ूकति ग्यारस बारस स आसी
"रामानन्द"जी रा भणत कबीरा मझला मझला चढ़ ज्यासी 4

86:-

हर भज हर भज हीरा परख ले, समझ पकड़ नर मजबूती ।
अष्ट कमल पर खेलो मेरे दाता, और बारता सब झूठी ॥टेर॥
इन्द्र घटा ज्यूँ म्हारा सतगुरु आया, आँवत ल्याया रंग बूँटी ।
त्रिवेणी के रंग महल में साधा लाला हद लूटी ॥1॥
इण काया में पाँच चोर है, जिनकी पकड़ो सिर चोटी ।
पाँचवाँ ने मार पच्चीसाँ ने बसकर, जद जाणा तेरी बुध मोटी ॥2॥
सत सुमरण का सैल बणाले, ढाल बणाले धीरज की ।
काम, क्रोध ने मार हटा दे, जद जाणा थारी रजपूती ॥3॥
झणमण झणमण बाजा बाजै, झिलमिल झिलमिल वहाँ ज्योति ।
ओंकार के रणोकार में हँसला चुग गया निज मोती ॥4॥
पक्की घड़ी का तोल बणाले, काण ने राखो एक रती ।
शरण मच्छेन्द्र जति गोरक्ष बोल्या, अलख लख्या सो खरा जती ॥5॥

87:-
गरभ करे सो गिवारां जोबन माया पावणा दिन च्यारा
पशु चाम की बणे पन्हैय्या ढोलक बणे नगाडा
नर तेरी चाम काम कोनी आव जळभल होत अंगारा जोबन माया पावणा दिन च्यारा
हाड मास का बण्या पिंजरा भीतर भरया भंगारा
ऊपर रंग सुरंग लगाया कारीगर करतारा जोबन माया....
 बीस भुजा दस मस्तक जिनके पुत्र घणा परिवारा
ऐसा मर्द गरद माही मिलग्या लंक पति सरदारा जोबन माया.....
गरभ करयो डूंगर वाली चिरमी मुह काला कर डाला
गरभ करयो रतनागर सागर नीर खारा कर डाला जोबन माया......
यो संसार ओस वालो मोती गलता ने लागे कोनी बारा
कहत कबीर सुणो भाई साधो हरभज उतरो पारा जोबन माया.....
88:-
चढ़ चालो गुरांजी के देश बठ ही तेरो साहेबो बसे
साहेबो बसे रे तेरो साहेबो बसे -2
फूल कमल का मंजन करले आसन पद में धरो भाई साधो
उल्टा बाण शिखर घर मारों जमड़ा स राड़ लड़ो सुहागन सुरता मान कयों
अविनाशी घर वृक्ष लगाया नहीं धूप नहीं छाया भाई साधो
जड़ नादान पता नहीं उनके चारुं दिशा में र छायो सुहागण सुरता मान कयों
रिमझिम रिमझिम मेवला से बरसे हिवड़ो हबख रयो भाई साधो
बिन बादल बिना चिमके बिजली अनहद गरज रयो सुहागण सुरतां मान कयों
सतगुरु बाण समझ कर मारया नैणा से नीर भयो भाई साधो
"रेवादास" शरण सतगुरु की अधर सिंघाषण पियो पायो सुहागण सुरतां मान कयों
89:-
बार बार समझायो मेरा मनवा जनम गमा दियो हाथा हि।
अंत बुढ़ापो आया सरसी सदा जवानी रह नाही
हाड हाड में बादी रमज्या हाल्यो चाल्यो जा नाही
कुटम्ब कबीला न खारो लागे बहू बेटा बोल नाही
जद बोल तो ऐसा बोले तने मौत आवे नाही
कोडी कोडी माया जोड़ी जोड़ धरी है जमीं माहि
दिया लिया तेरे संग चलेगा रह ज्यावेगी यहाँ की यहाँ ही
धर्मराय जी पूछण लाग्या साँची बात कहो भाई
मृत्युलोक म जाकर बंदा सुपरथ काम करयो काई
लाल खम्भा के बान्थ घलावे आंच सही जावे नाही
कहत कबीर सुणो भाई साधो करसी सो पासी यहाँ ही।

90:-

या नारी कुबद् की खान है ऐतबार नही नारी का !!टेर!!

शंख पति की लुणा राणी, पुरण का करया नाश !
पुत्र पे डिगाई नीत, देखो कैसे हो विस्वास !
कैकई के कारण देखो, राम गये बनवास !
राजा थे उतान- पाद, ध्रुव जांके गोद में !
प्रेम से लड़ाया लाड, खुसी हुए मोद में !
मौसी ने फटकार दिया, पुत्र के प्रमोद में !
ज्यांका उतर दिशा स्थान है, तन अमर ब्रह्मचारी का !!१!!

पांडवो की नारी प्यारी, द्रोपदी का सुनो हाल !
दुस्सासन का रक्त लेवे, खुन से संवारे बाल !
भारत मे लड़ाई छीड़ी, कौरवों का आया काल !
ॠषी थे दुर्वासा एक, लगे हुए ध्यान में !
स्वर्ग सेति नारी आई, बैठ के विमान में !
ॠषि आगे नृत्य किया, जायकै स्थान में !
डिग गया मुनि का ध्यान है, तप खो दिया तपधारी का !!२!!

नारी ही के कारण देखो, चन्दा के लगा था दाग !
नारी ही के कारण देखो, भरतरी न त्यागा राज !
नारी ही के कारण देखो, लंका मे लगी थी आग !
माया की प्यारी राणी, देखलो ईतिहास में !
बड़े- बड़े भूप खप गये, नारी के विस्वास में !
कृष्ण जी ने नृत्य किया, गोपियों के पास में !
ये वेदों का परमान है, मन मोह्या ओतारी का !!३!!

नारी है निर्बुद्धी देखो, नारि के विचार नही !
मौका उपर घात करे, पति का भी प्यार नही !
ध्यान से विचार यार, इसमें है विचार क्या !
त्रिया जाल रचे तब, पावेगा शुम्मार क्या !
ज्ञानी हो पिछाने जाने, कहने की दरकार क्या !
सब कहता शास्त्र पुरान है, कर गौर बात म्हारी का !!४!!
या नारी कुबद.......

91:-

सुन्न घर शहर,शहर घर बस्ती
कुण सोव कुण जागे है ।
साध हमारे हम साधन के
तन सोवे ब्रह्म जागे है ।।

जल विच कमल कमल विच कलियाँ
भँवर वासना लेता है
पांचू चेला फिरे अकेला
अलख अलख जोगी करता है

भंवर गुफा में तपसी तापै
तपसी तपस्या करता है
अस्त्र,वस्त्र कछु नहीं रखता
नागा निर्भय रहता है ।।

एक अप्सरा आगै ऊबी
दूजी सुरमो सारे है
तीजी सुषमण सेज बिछावे
परण्या नहीं कंवारा है ।।

एक पिलंग पर दो नर सूत्या
कुण सोवै कुण जागै है
च्यारूं पाया दिवला जोया
चोर किसी विध लागै है ।।

परण्या पेली पुत्र जलमिया
मात-पिता मन भाया है
शरण मच्छेन्द्र जती गोरख बोल्या
एक अखंडी नै ध्याया है।।

जीवत जोगी माया भोगी
मरया पछ नर माणी है
खोजो खबर करो घट भीतर
"जोगाराम" की बाणी है ।।

92:-

साधो भाई देखो न नजर पसार या काया तन में रेल चल
गाड़ी चलती है इंजन से इसमे सात जगह पाणी के बल से
टिणों की एक कल से धुआं निकले बे तो शुमार या अग्नि आठुं पहर जलै (1)
पांच टिकट काटणिया पच्चीस टिकट बाँटणियातीन रेल रोकणिया
इसमे चेतन सुरता है असवार या गाड़ी जद पेण्ड धरै (2)
नो सौ कील जोड़न की नवासी कील मोड़न की
पिच्यासी कील दोड़ण की जिसमे ऐसा नही रे हथियार मांग्याँ कोनी मौल मिलै (3)
शिवलाल भजन बनाया ताजा इसमे रख दिया दस दरवाजा
दो पहिये छत्तिसुं बाजा एक दिन निकले डलेवर बाहर या गाड़ी कोनी पेंड धरे (4)

93:-

पापी के मुख से राम कोणी निकले ,केशर ढुल गई गारे में ।
मिनख जमारो बन्दों एल्यो मत खोई ना
सुपरथ करले जमारे न ।।
भैंस पद्मनी न गहनों पहनायो ,के जाने नोसर हारा ने ।
पहन कोणी जाने वा तो ओढ़ कोणी जाने उम्र गमादी गोबर गारे में ।। 1
सोने की थाल में सुरी न परोषि ,के जाने जिमन हारा ने ।
जिम कोणी जाने बातो झूंठ कोणी जाने हुलड़ हुलढ मर गई जमारे में ।।2
काच के महल में कुतिया सुहाणि ,के जानें रंग चौबारे मे ।
सोया कोणी जाने बातो ओढ़ कोणी जाने घुस घुस खो दियो जमारे नेेें।।3
मानक मोती मूर्खा दीन्हादलबा तो बेठ गया सारा ने हीरे की पारख जौहरी जाने ,के जाने मुर्ख गंवार ने ।। 4
अमृत नाथ अमर भया जोगी ,जार गए काचे पारे ने
भूरा भजन राम का करले हरी मिले दसु द्वारे में ।।5
पापी के मुख से राम कोणी निकले केशर ढुल गई गारे में ।
मिनख जमारो बन्दों एल्यो मत खोई ना सुपरथ करले जमार न ।।

94:-

आ गिरधारी रे सांवरा आ बनवारी रे नरसिलो खड्यो उडीक अब तो आ गिरधारी रे
आ समय भात की आयी पर तू ना सूरत दिखाई अब तो होव लोग हंसाई अब तो आ गिरधारी रे
म तेरे भरोसे आयो सागे भी कछुयन ल्यायो में आकर के सरमायो अब तो आ गिरधारी रे
के तन नींद सतायो क सतभामा बिल्मायो क भगत कोई अटकायो अब तो आ गिरधारी रे
थे भात भरण ना आस्यो आ नानी तो मरज्यासी या थारो बिड़द लजासी अब तो आ गिरधारी रे
वसु देवकीनंदन आया कंचन का मेह बरसाया "गौपाल विमल" जस गाया अब तो आ गिरधारी

95:-

कानुड़ा थारी लागे छवि प्यारी बिरज म बाँसुरी बाज़ी
मीरां महला उतरी रे छापा तीलक लगाय
बतलाई बोल नहीं रे राणों रयों रिझाय रे।
मीरा ऊभी गोखडे रे उंटा कसीयो भार
दाव छोडयों मेडतो रे सीदी पुष्कर जाय रे
जहर पीयालो राणों भेजीयो रे दयो मीरां न जाय
कर चरणा मृत प़ी गयी रे थे जानों यदुनाथ रे
सर्प पिटारो राणों भेजियो रे दयो मीरां न जाय
खोल पिटारो मीरां पेरीयो रे बनग्यों नोसर हार रे
राणों मीरां पर कोपियों रे सूत लयी तलवार
मारया पिराछ्ट लागसि रे पीवर दयो पहुचाय रे
मीरां हर की लाडली रे राणों बन को ठूंठ
समझाया समझयो नही रे ले ज्याति बेकुंट रे

96:-

दयो वरदान मुझे भक्ती का जागो शंकर बम लहरी ।
अन्न धन का भण्डार खोल दयो सेवा करा मालिक थारी
अंग भभूती ललाट चंद्रमा मुण्डीयन की माला पहरी
बासुकी नाग गले में टूले शीश जटा गंगा बह री
गांजा सुल्फा भाँग धतूरा नशा करे शंकर जहरी
अमल तमाखू भाँग छुन्तरा प्याय रही गौरां प्यारी
भक्ती से वरदान ले लियो तपस्या जाय करी गहरी
भस्मी कड़ो दियो दाने न शिव के गेल हुयो बैरी
आगे शंकर लेर दानो देण लग्या खण्ड में फेरी
गिरिजा रूप धरयो विष्णू न दाने की करदी ढेरी
दस शीश रावण के बकश्या बीस भूजा हस्ती गहरी
विजये का वरदान पायके राम परणी सीता हरी
काशी चेला शिव संकर का पार करो इनकी फेरी
पलक उघाड़ो अन्तर यामी सुमरण का पासा गेरी
झिलल झिलल वालो कूम्हलावे आवन की मत कर देरी
रामजी लाल बिड़द बखाणे सुण भोला करुणा मेरी

97:-

सुणो ब्रज की नार मन करयो है विचार
राधे जी बण्या सूबेदार जय जय कृष्ण हरे
कोट बूंट सूट पेर ल्यो ए सब ब्रज की नार
चालांगी नन्द जी के द्वार जय जय कृष्ण हरे
कोट बूंट सूट पेर के होगी सब तैयार
पायल देयी है उतार जय जय कृष्ण हरे
आगे आगे फोज चाले जी पीछे चले सूबेदार
पांव उठे है इकसार जय जय कृष्ण हरे
खड़क खड़क चलने लगी जी सब ब्रज की नार
घेरया है नन्द जी का द्वार जय जय कृष्ण हरे
कह यशोदा सुण संतरी केसे आये जी मेरे द्वार
काहे को घेरया मेरा द्वार जय जय कृष्ण हरे
मटकी फोड़ है भुजा मोड़ है तेरो नन्द कुमार
ब्रज की जाती है पुकार जय जय कृष्ण हरे
पिता पुत्र न पकड़ ल्याओ ऐसे बोली सरकार
हाज़िर करो ना दरबार जय जय कृष्ण हरे
इतनी सुण भीतर गयी श्री नन्द जी की नार
पुतर न बोली पुचकार जय जय कृष्ण हरे
कह यशोदा सुण कान्हां मत जाये बेटा बाहर
पकडन आग्यो सूबेदार जय जय कृष्ण हरे
हठ करके बाहर आगये जी श्री नन्द कुमार
राधे जी देख्या सूबेदार जय जय कृष्ण हरे
कह कन्हैयो सुण राधिका खूब करयो सिणगार
राधेजी होया है लाचार जय जय कृष्ण हरे
राधे जी पड़ गई चरणों में हँसे नन्द कुमार
शरमा गयी ब्रज नार जय जय कृष्ण हरे
या लीला नित की करी जी राधे नन्द कुमार
गोविन्द जाऊ बलिहार जय जय कृष्ण हरे

98:-
श्री बालाजी ने लाड लडावे माता अंजना
बालपणे में बाबो सूरज पकड्यो
सारा देवता न ल्याय छुडावे माता अंजना
न्हाय धोय कर कस्यो है लंगोटो
राम जी को नाम पढावे माता अंजना
सवा सवा मण का रोटिया चूर कर
बालाजी ने भोग लगावे माता अंजना
जाओ हनुमंत खेलो पर्वत पर
विद्या बल बुद्धि बढ़ावे माता अंजना
"माधव"कहे कोई ओळ्यूं म्हारी सिमरे
अन्न धन लक्षमी बढ़ावे माता अंजना
99:-
बिणजारी ए हँस हँस बोल प्यारी प्यारी बोल बाता थारी रह ज्यासी
बिणजारो मत जाण बातां रह ज्यासी
कंठी माला काठ की रे माही रेशमी सूत
सूत बिचारा के कर जद कातण वाला कपूत
रामा तेरे बाग़ में रे लाम्बी भदी खजूर
चढूं तो मेवा चाख ल्यूं पड़ते ही चकनाचूर
बालपणे में भज्यो नहीं रे करयो न हरी से हेत
अब पछताया के होव जद चिड़ियाँ चुग़ गयी खेत
टान्डो थारो लद गयो रे होगी लाद प लाद
रामानंद का भणे कबीरा बैठी मोजा मार बाता रह ज्यासी....

100:-
आओ वीर हनुमान देवता सारे म्हारे रीद्ध सिद्ध लेकर आओ गजानंद प्यारे ।
रणत भँवर से आवो गजानंद देवा थारे रीद्ध सिद्ध घर नार करे थारी सेवा ।।
सिंह चढ़ी हिंगलाज जगे मेया ज्योति ,थारे गल पुष्पन का हार, हंस चुगे मोती ।।
थे आवो वीर हनुमान
हो बेल न असवार शंकर देवा थारे भूत जोगनी नार थारी करे सेवा ।
हो भैसे असवार शनि महाराजा , तेरे भक्त करे अरदास सार तेरा काजा ।।
गावे नरसिंह दास सिंघाने वाला , थाणे~ थारे हरदम करता ध्यान करो प्रतिपाला ।।

101:-

बोल हरी बोल हरी हरी बोल,केशव माधव गोविन्द बोल ।।

गौतम नार उद्धार कियो प्रभु,आगे चल बढ़के रघुराई।
घाट के तीर खड़े दोऊ बान्धव, ऊँच किये कर टेर लगाई।।
घट घट वासी अन्तर्यामी, जान गए मन गयो डराई।
बारम्बार श्री राम कहे तू नाव ला केवट नाव ला भाई।। (1)बोल हरी,बोल हरी,हरी हरी बोल..

गौतम नार ज्यूँ नाव उड़े प्रभु,भूखे मरे परिवार लुगाई।
हूँ धनहीन गरीब घणो,मोसे दूसरी नाव न जाय बनाई।
चरण कमल निहार कहूँ, दूसरी नाव न जाय बनाई।
बारम्बार मलाह कहे,या दूसरी नाव न जाय बनाई ।। (2)बोल हरी

नर तन धार सुकर्म कियो,मम बोल्या न झूठ न किन्ही ठगाई ,
प्राण जाय पर वचन न जाई,रघुकुल रीत सदा चली आयी ,
ना तेरी नाव उड़े नभ को, तू लावत ना मन नेक कच्चाई
बारम्बार दयालु कहे ,तू नाव ला केवट नाव ला भाई ।। (3) बोल हरी

नाव उडी न जो नार भई तो, दो स्त्रीयन में होसी लड़ाई ,
कूद पडूँ गहरे जल में , कटिलो पानी म हाथ बताई,
लक्ष्मण रोष भये भय ठाई, दीठ मल्लाह करे निठुराई ,
दीन सो जान के हाथ उठे ना, मार के गंगा में देत बुहाई ।। (4)बोल हरी

गणिका गीध अजामिल से खल, पार कियो प्रभु सजन कसाई ,
पापी नेक लिखी नही गणिका, नाम लियो निज लगन लगाई ,
पार उतार कछु बार नही नाथ, जो में लेऊँ चरण धुलाई ,
बारम्बार मलाह कहे या दूसरी नाव न जाय बनाई ।। (5)बोल हरी

राम हँसे मन मुदित भये, दीन्हों निज शीस पे हाथ फिराई ,
भय को त्याग अभय मन होज्या, कहो मलाह कौन निठुराई ,
पग धो चाहे सर धो चाहे, गंग की धार में लेवो नुव्हाई ,
बारम्बार श्री राम कहे तू , नाव ला केवट नाव ला भाई ।। (6)बोल हरी

काठ कठौत में पानी भरो, बाँकी भामनी है संग में चली आई ,
धोकर चरण प्राण में बातो, फूली न जाय अंग में समाई,
धन धन आज पति मेरे केवट, घर चल के आये रघुराई ,
बारम्बार मलाह कहे नाथ दूसरी नाव न जाय बनाई ।। (7)बोल हरी........

जात से जात न लेत मजूरी, यही रीति सनातन से चली आई ,
धोबी की धोबी से नाही , धुलाई,नाई की नाई से नाही मुंडाई ,
तुम केवट भव सागर के प्रभु, मैं केवट छोटी सरताई

आये घाट श्री राम हमारे, मैने दिये ह पार लगाई ,
जो किण घाट तुम्हारे पे आउ , मो संग करियो ना निठुराई ,
बारम्बार मलाह कहे, नाथ न चाहे मुझको उतराई ।। (8)
बोल हरी बोल हरी हरी हरी बोल केशव माधव गोविन्द बोल